CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5.3

स्वामी शिवानन्द

5.3

लेखक
श्री वेदानन्द झा

अखिल भारतीय
शिवानन्द साहित्य वितरण संस्था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

—: प्रकाशक :—

श्री स्वामी कृष्णानन्द

सभापति

अखिल भारतीय

शिवानन्द साहित्य वितरण संस्था

प्रथम संस्करण—१०००

स्कन्द षष्ठी सं० २०१८

(दिव्य जीवन संघ द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

मुद्रक :—

श्री कुमार तारानन्द सिंह

वनैली प्रेस,

भागलपुर।

मूल्य—१) रु०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

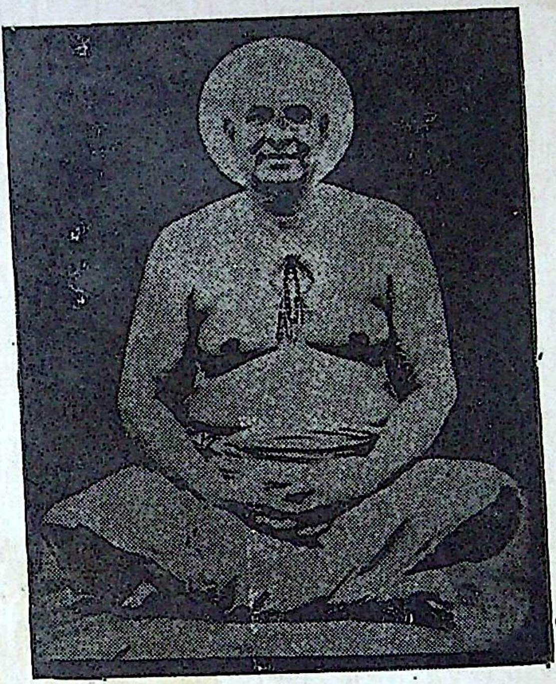

श्री स्वामी शिवानन्द, ऋषिकेश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समर्पण

मिथिला क प्राचीन गौरव सँ अनुप्राणित जनक, याज्ञवल्क्य,
गौतम, विद्यापति आ वररुचिक पद चिन्ह
पर चलनिहार, योग वेदान्तक व्रती
अध्यात्म-वीर वन्धु क
कर कमल
में।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक क वक्तव्य

लीअऽ मैथिली में एक महासंत क जीवन चरित्र। ई पूजा क आंजलि अखिल भारतीय शिवानन्द साहित्य वितरण संस्था क मैथिली कमिटी दऽ रहल अछि। 'योग क सारांश' एकर प्रथम पुष्प छल।

स्वामी जी महाराज क अनेकों जीवन चरित्र छपल छैन। मैथिली में एकौटा नहिं छल। मिथिला में ऋषि मुनि क वंशज लोकनि बैसल छथि। स्वामी जी प्राचीन संस्कृति क, उपनिषद परम्परा क उत्थापक छथि। परिचय भेने प्रसुप्त संस्कार जागक वेशी सम्भावना। शास्त्र क समुदाय सँ जाहि आदर्श के स्थिर करब कष्ट साध्य अछि से हिनका जीवन में अनुप्राणित पवित्र साधक लोकनि के सुविधा हेतैन।

शिवानन्द साहित्य विश्व में अध्यात्म क्रान्ति क अग्रदूत भेल अछि। तकर अध्ययन मनन सँ आहांक जीवन में आश्चर्य-जनक परिवर्त्तन भऽ सकंये।

अन्त में हिनके प्रयुक्त किछु कविता क समावेश भेल अछि। कविता आत्म-विश्लेषण क, आत्म समर्पण क मुक्त गायन अछि। आशा अछि अपने सभ के पसिन्न पड़त।

॥ शुभमस्तु ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

गुणालयं दयामयं सदाशयं मुदाकरं
गुरूत्तमं कृपा निधिं श्री शिवं समाश्रये ।

स्वामी शिवानन्द क जीवन चरित्र जतबा बुझलियैक अछि अपने लोकनिक सोझाँ रखवा क हमरा हर्ष अछि। ओना तऽ ईश्वर क विशेष विभूति क मर्यादा लोक क सिमित मस्तिष्क में नहिं समाइ छै आ जे तीस पैंतीस गोट जीवनी हिनकर विभिन्न भाषा में बहार भेल छैन, सभ में किछु नवीनता भेटत, किछु विशेषता जे लेखक क दृष्टिकोण सँ भेल अछि। तैं बूझव जे आवहु वर्णन पूर्ण भेल अछि से नहिं। सब पढ़ियो गेने बुझना जायत जे बहुत जानक बांकी अछि।

तैं हम मुख्य घटना क संक्षेप मात्र देल अछि। आधार रहल अछि मुख्यतः स्वामी वेंकटेशानन्द जी क 'गुरूदेव शिवानन्द' हिनके आग्रहें ऐ ग्रन्थ क लिखवा में प्रयत्नशील भेलौं। ओना तऽ राम गुण गौने कल्याणे टा होइ छै। महापुरूष क जीवन चरित्र पढ़ने, लिखने ताहि पर मनन केने श्रेय मार्ग क उद्दीपन होइ छै। स्वाध्याय में एकर उच्च स्थान छै। मानवता क सर्वोत्तम शिक्षा भेटै छै। स्वतः सोचि कऽ श्रेय पथ के निर्धारित करक सभ के सामर्थ्य नहि रहै छै। पूर्ण विकसित आत्मा क प्रकाश में बहुतके आंखि खूजि सकं छनि।

यदि ऐ जीवन चरित के पढ़निहार लोकनि के जिज्ञासा होनि 'दिव्य जीवन' पर मनन करक तऽ लेखक अपन प्रयत्न सफल बुझताह।

॥ ॐ शान्ति ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

जखन जखन हो धर्म क अवनति
हो अधर्म विस्तार।
मनुज बनल अव्यय अज आवथि
करथि धर्म उद्धार।
जन्म, कर्म हो दिव्य हुनक जग
सत्य क करथि विकास।
बूझि चरित्र हुनक बुध पावथि
श्रेय परम उल्लास।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभूति

भगवान क सीमित नहिं छैन, असीम छैन। अग्नि मीड़े क समय में जे विभूति रहैन से अणु विस्फोट क समय तक अक्षुण्ण बनल छैन। हुनकर रहस्य बरोबरि हुनके प्रकृति प्रगट करैत रहलन्हि अछि। वैह सन्त, महात्मा, अवतार सुधारक बनि बनि विश्व क विभिन्न विभाग में सनातन एकमात्र धर्मक, विभिन्न भाषा में, वेश भूषा में प्रतिपादन करैत रहलाइ अछि।

प्रस्तुत ग्रन्थ ओहने एक महात्मा क जीवन सँ सन्बन्धित अछि :जे अपना जीवन के आर्य संस्कृति क अभ्युत्थानक हेतु बलिदान कयलन्हि अछि, जिनका वेदान्त क विजय दुन्दुभि सुदूर अमेरिका, यूरोप, अफ्रिका आदि महादेश में विभिन्न संस्कृति क लोक में गुंजित भेल छैन।

पहिने अनेकों भाषा में हिनकर जीवन कथा प्रकाशित भऽ चुकल छेन। ब्रह्मवित् ब्रह्मैव भवति एक श्रौत सत्य थीक। तैं हुनका जीवन के पूर्णतया के चित्रित कऽ सकंत अछि। जतवा बुझलियेक अछि तकरा मैथिली भाषा भाषी क समक्ष आन क उत्कंठा छल हमर धारणाअछि जे आर्य संस्कृति क संस्कार एखनो अही क्षेत्र में विशिष्टरूपें अवशिष्ट अछि आ दृढ़ तत्पर अनुसन्धान सँ, लक्ष्य क प्रतिनिष्ठा सँ पुनः स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं के ध्वनि घर घर में गूँजि सकै ये। अपनहिं सब तकर साक्षी छी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

उपोद्‌घात

'के जाने कोन रूप में नारायण मिल जाथि'। तँ हृदय क द्वार खूजल राखू। जतऽ आन कहैत अछि 'भगवान छथि' एक बेर जा कऽ देखिऔ तऽ जे ककरा लोक भगवान कहै छे। की कारण छै ककरो से बाजक।

ओना तऽ भगवान अणु अणु में व्याप्त छथि। देखनिहार हुनको सर्वत्र देखि लैत छैन-चर्म चक्षु सँ नै, अन्तर्दृष्टि सँ। किन्तु से देखक सामर्थ्य बराबरि शृष्टि में कम्मे लोक के रहैत आयल छै। यद्यदि हमरा सभ गोटे के जीवन क लक्ष्य सैह थीक, बहुत गोटे के तकर कोनो बोध नहिं अछि। तैं हमरा लोकनि हुनका विभूति में हुनकर कल्पना करैत ओयल छिऐन। वेवूझ लोक हमरा सभ के मूर्त्ति पूजक कहै छथि।

बैदिक युग में हम सभ सूर्य, चन्द्रमा पूषा, पवन, अग्नि बिजली, अंधड़ आदि में परमेश्वर क सत्ताक विशीष्ट अभिव्यक्ति क महत्ता गाओल। तही भाव क यत् यत् विभूति मन् लोके सम तेजो अंश संभवम् सँ स्मृतिमें राजामें आ वीरमें, तेजस्वीमें आ मुनि में हमरा लोकनि परम सत्ताक प्राकट्य पाओल। तदर्थ निराकार, अव्यय सनातन क विग्रह बनाओल। बेर बेर दोहराओल जे ओ खाम्भो सँ प्रगट भऽ सकै छथि, साड़ी बनि सकै छथि आ भक्तक पुकार पर कतऽ ने चमत्कार देखा सकै छथि। तऽ हमर श्रद्धा रहल हुनका प्रगट रूप में राम रहथु वा हनुमान, घर में मांटिक गोसाऊनि क पीड़ी हो वा शिव लिंग।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सस्य श्यामला लय धरणी निज
छली सुशोभित गात।
आम्र वकुल छल दूर दूर तक
छितरल चारू कात।
कल कल ताम्रवती जल छल छल
छलकल भादव मास।
पत्तमदइ ;छल ग्राम भरल लय
नूतन किछु उल्लास।
वेंगु पार्वती अम्मल केर घर
उतरल दिव्य प्रकाश।
अर्भक .लक्षण चारु सुशोभित
पंकज भेल विकास।
मंगल गीत उषा छल गाओल
उडुगण विविध प्रकार
स्वजन बंधु, सब आयल हर्षित
वेंगु क चलि आगार।
कहल देखि गणितज्ञ सुनू सब
बड़ भाग्य क अछि वात
अर्भक आजुक होनहार बड़
नूतन करत प्रभात
कुप्पू नाम कयल मिलि गुरुजन
स्वामी गोत्रक नाम।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाहि गोत्र में अप्पय दीक्षित
रहथि शैव्य गुणधाम।
छलखिन्ह जननि पिता बड़ धार्मिक
करथिन्ह व्रत, उपवास।
अर्चन पूजन चंद्रमौलि केर
छलन्हि हुनक आयास।
चंद्रमौलि शिशु लय प्रतिभा नव
ओनल मोद हुलास
युग द्रष्टा केर जन्म न जानल
निरखि लोक आवास।
दिन दिन जतय ततय सँ आवय
बहु तरहक उपहार।
सुख सम्पन्न समृद्धि भरल छल
हुनक नित आगार।
हंसी खुशी में बाल्य बिताओल
युग नायक भगवान।
प्रतिभाशील, प्रसन्न, चतुर, मृदु
छल नित चरित जहान।
छल सुगठित, आकर्षक, सुन्दर
हुनकर आनन देह।
कुल परिवार, गाँव घर सब मिलि
भूरि, कयल नित नेह।
ऊठय झलकि अंश किछु शिशु में
की भविश्य भेनिहार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छोट वयस होइतो संगी में
ई बड़ छला उदार।
जाति कुल क अभिमान छलन्हि नहिं
करितथि सभसं प्यार।
एक वेर लय अन्त्यज सहचर
आनि देल घर भोज
हुनकर कय आतिथ्य नम्र बड़
पुनि पुनि कय कय खोज।
फेलकन्हि बड़ आपत्ति वृढ़ सब
कहि कहि कथा अवाच।
रूसि फुलि समझौता कयलन्हि
दृढ़ रहि सहला जांच।
भक्ति बहुत गुरुजन में करितथि
किछु नहिं हुनक विचारि
करितथि बात हुनक तत्पर बनि
करितथि पाठ सम्हारि।
ओना बहुत ई तीव्र छात्र बनि
छला ततय विख्यात।
होथि बराबरि प्रथम वर्ग में
सुगठित सुन्दर गात।

Dr: Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चनथि नायिका नायक यदि हो
नाटक, या किछु खेल।
स्वागत गान, बिदाईक भाषण
से हो वहुधा देल
स्पर्धनीय सर्वोत्तम वर्ग क
करथि वहुत आमोद।
प्रतिभा देखि हुनक शिक्षक सभ
लेथि प्रेम सँ गोद।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आहाँ भगवान के देखलियैन्ह अछि।

एक अमेरिकन दार्शनिक डाक्टर टौमसन्न पुछलखिन्ह।

"स्वामी जी महाराज आहाँ भागवान के देखलियेन्ह अछि ?" स्वामीजी उत्तर देलखिन्ह "हम भगवान छोड़ि और किछु ने देखै छी। जे अन्न खाइ छी, जे पानि पिवैछी, जे लोक सँ भेट होइये, जकरा नमस्ते कहै छियै, आ अहूं में डा० टौमसन हम भगवान छोड़ि और किछु ने देखें छी।

―――――

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिव धर्म

सेवा, प्रेम, शौच, त्याग, ध्यान आ अनुभव करू।

सेवा

(१)—सेवा सँ हमर विकास भेल अछि। सेवा सं हम पवित्र भेल छी।

(२) हम अपना के बराबरि पूर्णत: लगौने रहै छी।

(३) आसमाप्त हम कोनो काज छोड़ै नहिं छिऐ।

(४) हम दीर्घ सूत्री नहीं छी।

(५) हम सबहुक सेवा करै छिऐ।

(६) विश्व शान्ति क हेतु, पीड़ित क हेतु, मृतात्मा क हेतु हम भजन कीर्त्तन करै छी।

(७) हम दीन क सेवा करैछी।

(८) साधु संतक, रोगी क पैर मालिस करै छिऐ।

(९) अतिथि तक सेवा में हम सतर्क रहै छी

(१०) हम अपन बात रखै छी।

(११) पत्र क उत्तर देवा में हमरा विलम्ब नहिं होइत अछि

(१२) निस्वार्थ सेवा सँ हम सभ के प्रसन्न केने रहै छिएन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१३) दया और सेवासँ, सम्मान और प्रेम सँ, हम लोक स काज लै छिऐ।

(१४) हम लोक क बात मानै छिऐ।

(१५) हम नम्र रहैछी, सादगी सँ रहै छी।

(१६) जे कहक रहैये साफ साफ कहै छिऐ।

(१७) हम निर्भीक आ प्रसन्न रहै छी।

(१८) अपमान, अभिघात हम सहि सकै छी।

(१९) हम कम बजै छी। वेशी सोचै छी। वेशी ध्यान करै छी। वेशी सेवा कार्य करै छी।

प्रेम

(२०) हम सभ स प्रेम करै छिऐ।

(२१) श्रेष्ठ के, साधु के सम्मान करै छिऐन्ह।

(२२) सम धर्म क संत, महात्मा के हम सम्मान करै छिऐन्ह। सम धर्म, संत, सम्प्रदाय आदि के हम सम्मान करै छिऐ।

(२३) हम सतत प्रसन्न रहै छी। अनको प्रसन्न रखौ छिऐ।

(२४) हम मधुर-भाषी छी।

(२५) हम सहनशील आ उदार छी।

(२६) सभ सँ सहानुभूति रहै ये।

(२७) बचा सन हमर स्वभाव अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२८) हम क्षमाशील छी।

(२९) कोखन बदला लेवाक विचार नहिं उठैत अछि।

(३०) अधलाह क बदला हम नीक करै छिऐ। जे अभिघातो करैये तकरो खुशी सँ सेवा करै छिऐ।

त्याग

(३१) देवा में हमरा आनन्द होइये। बराबरि दै छिऐ।

(३२) हमर उदारता असीम अछि, स्वाभाविक अछि।

(३३) अपना छात्र के, गरीब के भोजन करेबा में हमरा बड़ा आनन्द होइये।

(३४) छात्र क हेतु हम माता जकां हेवाक चेष्टा करै छी।

(३५) हम बहुत दान दै छी।

(३६) अपना हेतु बचा कऽ हम नै किछु रखै छी।

शौच

(३७) गुरुजन क हम बराबरि श्रद्धा आ भक्ति सं सेवा केने छी।

(३८) परिव्राजक जीवन में हम भुखले रहैत रही। सड़के पर सुतैत रही। देह पर कपड़ों ने रहैत रहे। रोटी पानि में भिजा कऽ खाइत रही।

(३९) अनेको गुण क हम विकास कयलहुँ।

(४०) हम अपना आदर्श पर, सिद्धान्त पर, दृढ़ रहै छी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(४१) एकादशी कऽ उपवास करै छी। रवि कऽ नून नहिं खाइ छी।

(४२) अहिंसा, सत्य आ ब्रह्मचर्य क हम अभ्यास करै छी ।

(४३) बराबरि अन्तर्मुख भेल हम आत्म-विश्लेषण करै छी।

(४४) आसन, प्राणायाम हम नियमित रूपें करै छी।

(४५) हमर जीवन सुसंयमित अछि।

(४६) सभ के सम्मान करै छिऐ। सभ के पहिने नमस्कार करै छिऐ।

(४७) वेशी वहस नै करै छी। मौन रखै छी।

(४८) हम धर्म-ग्रन्थ पढ़ै छी।

ध्यान

(४९) बराबरि हम आत्मा क आराधना करै छी। सबहक कल्याण-कार्य करै छी।

(५०) वेदान्तिक ध्यानक हेतु अहं ब्रह्मास्मि, शिवोऽहं सोऽहं सच्चिदानन्दस्वरूपोऽहं ' हमर प्रिय मंत्र अछि।

(५१) बराबरि निदिध्यासन क मुहावरा अछि। प्रज्ञानं ब्रह्म, तत्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म, सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म शान्तं, शिवं अद्वैतं, अहमात्मा गुडाकेश अहमात्मा निराकारः सर्वव्यापी स्वभावतः ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः अकर्ता अभोक्ता असङ्ग साक्षी, अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(५२) हम जल वायु परिवर्तन क हेतु समुद्र क कांत वा पहाड़ पर नहिं जाइ छी। काजे बदलि देने हमरा विश्राम भेटैत अछि। ध्यान में हमरा पर्याप्त विश्वास भेटैत अछि।

(५३) हमर आनन्द अबर्णनीय अछि। हमर भण्डार असीम अछि। त्याग; सेवा, जप, कीर्त्तन, ध्यान सँ हमरा से भेटल अछि।

अनुभव

(५४) जतेक हमरो बूझल अछि ततबे अनका उपदेश करै छिऐ।

(५५) हम योग-समन्वय करछी आ कहै छिऐ।

(५६):- हम बकवक वेदान्ती नहिं, अनुभवी वेदान्ती छी।

(५७) सभक संगे मिलै छी। सभ सँ मिलि कऽ एक बनि जाइ छी।

(५८) सभ में ईश्वर के देखै छी। सभ के प्रणाम करै छिऐ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चारु कात जखन उच्छृंखल कहयअहँक अछि सभ जन दोष ।
तौखन छी यदि दृढ़ अपना पर राखि सकी समता कय होश ॥
लोक करय सन्देह अकारण व्यंगक कहय विहुंसि बहु बात ।
तौखन यदि निष्ठा अपना पर रहय, करय नहिं किछु आघात ॥
अछि यदि धैर्य करक बिनु थकनहिं सतत प्रतिक्षा रहि चुपचाप ।
झूठ कहय जन से यदि जनितो स्वयं करी नहिं झूठ प्रलाप ॥
करय घृणा तकरो हित हो यदि अहँक हृदय में भाव उदार ।
बहुत नीक सन रही न लेकिन अथवा बनल बहुत बुधियार ॥
रहय स्वप्न पर स्वप्न न हो प्रभु करी, किन्तु नहिं सतत, विचार ॥
भेटय, विजय पराजय यदि जग एक रंग राखी व्यवहार ।
विकृत सत्य कहल अपनहिं यदि करय घात बड़ बिनु प्रतिकार ॥
दय जीवन जे रचल रम्य छल टूटय यदि से कृति-विस्तार ।
रची पुनः यदि से लय साधन जीर्ण शीर्ण पहिलुक हथियार ॥
सकल सफलता यदि जीवन केर एकहि बेर करी लय दाव ।
हारी, किन्तु न छोड़ी उद्यम खेवि चली लय तैओ नाव ॥
करी हृदय मजबूर चलक हित बिनु किछु कयने दुष्कृत पाप ।
हो यदि आह, एक नहिं मुँह में दुष्ट दलन सहि वा अनुताप ॥
हो दृढ़ता यदि बिनु किछु रहनहिं सम्बल अन्तरगत लय टान ।
रगड़ा कय समुदाय संग यदि धर्मक बनल रही व्रतवान ॥
भूप जकां रहितो नहिं छोड़ी यदि पीड़ित सँ प्रिय आचार ।
शत्रु मित्र या अप्रमत्त लखि करय न कौखन घातक वार ॥
आदर सबहक हेतु न अछि पर ककरो सँ किछु लाग विशेष ।
नहिं धर्षित अपमान करय वा बिस्मित केहनो वेश विदेश ॥
तखन अहींक ई विस्तृत जग थिक जे किछु सब समृद्धि अपार ।
निश्चित तखन कहै छी मानू अहीं रहब बनि हरि साकार ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिवानन्द जीवनीक पुण्य तिथि

जन्म	८ सितम्बर १८८७ ई०
सन्यास लेलन्हि	१ जून १९२४ ई०
ज्ञानोपलब्धि वर्ष	१९३० ई०
एखुनका आश्रम में पदार्पण	१७ जनवरी १९३४
दिव्य जीवन ट्रस्टक निर्माण	१३ जनवरी १९३६
दिव्य जीवन पत्रिका क प्रादुर्भाव	१ सितम्बर १९३८
शिवानन्द प्रकाशन संस्था	२९ जनवरी १९३९
दिव्य जीवन संघक रजिस्ट्री	१६ अप्रील १९३९
अखण्ड महामंत्र कीर्त्तनक प्रारम्भ	३ दिसम्बर १९४३
शिवानन्द आयुर्वेद संस्था प्रारम्भ	७ मई १९४५
अखिल विश्व धर्म संस्थान	२२ दिसम्बर १९४६
अखिल विश्व साधु संघ संस्थान	१९ फरवरी १९४७
हीरक जयन्ती जन्मोत्सव	४ सितम्बर १९४७
सन्यास रजत जयन्ती	१ जून १९४८
योग वेदान्त अरण्य विद्यालय	१ जुलाई १९४८
अखिल भारतीय यात्रा प्रारम्भ	९ सितम्बर १९५०
अखिल विश्व धार्मिक अधिवेशन	३ अप्रील १९५३
शिवानन्द रिगेलिआ	९ जनवरी १९५६
शिवानन्द प्लाटिनम जुबिली एवं शिवानन्द मन्दिर	८ सेप्टेम्बर १९५६
दिव्य जीवन संघ रजत जयन्ती	१९६१ ई०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रादुर्भाव

अथवा योगी जन क वंश में
लेथि पार्थ अवतार।
एहि विधि केर जन्मो थिक अर्जुन
बड़ दुर्लभ संसार
गी० अ०६ श्लोक ४२

नाचथि पितर देव गण नन्दित
भय आनन्द विभोर
मुदित जखन पृथ्वी नव धारथि
भक्त प्रवर निज कोर।
नारद भक्ति सूत्र ७१

सुदूर तामिल प्रान्त में जतय रामेश्वर आ कन्या कुमारी क छत्रच्छाया छैन प्राचीन काल सँ दिग्गज ऋषि महर्षि होइत अयलाह अछि। अही दिग्विभाग सँ वहरयला आदि शंकर जिन कर आर्य संस्कृति क हेतु शंखनाद एखनो शत सहस्त्र हृ-त्तल में गूंजि रहल अछि। ताही दिग्विभाग के लग भग वारह सै वर्ष क वाद पुनः श्रेय भेटलैन्ह अछि आर्य संस्कृतिक एक दोसर महारथी के उत्पन्न करक जे केवल वेदान्त आ सन्यास क ध्वजा पताका पुनः प्रतिष्ठित नहिं करथि बल्कि सनातन वैदिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धर्मक श्रेष्ठता सम्पूर्ण मेदिनी क विभिन्न देश में, विभिन्न जाति में, विभिन्न सम्प्रदाय में विस्तार करथि, स्थापित करथि।

ततहि ताम्रपर्णी क कूल पर अछि गांव पत्तमदइ। कल कल करैत नील सलिला ताम्रपर्णी क लोक माता जकां पूजा करै अछि। वसती क दृश्य कोनो प्राचीन आश्रम सन क। ओतहि रहथि हिनक माता पिता श्रीमती पार्वती अम्मल आ श्री वेंगु अय्यर, दूनू बड़ा धर्म प्राण। माय पूजा पाठ, सेवा शुश्रूष क काज में आदर्श आर्य रमणी जकां निपुणा। बाप सत्यवादि आ ईमानदार।

ताही गांव में ८ सितम्बर १८८७ ई० कऽ एक अपूर्व बाल क जन्म भेल। भादव क मास छल। नदी उमड़ल। धरणि सस्य श्यामला उषा काल में चारि बजे भोरे। भरिसक अ अर्भक के उषा काल क प्रतिष्ठा करक छलैन्ह।

वैदिक युग में उषा काल बन्दनीय छल। उषा काल प्रार्थना परमेष्ठी क विशेष प्रिय छैन। ब्राह्मण के भगवान सन्निधि में शीघ्रता सँ पहुँचावक कारण उषा काल ब्र मुहूर्त कहवेत अछि। काल प्रवाह में से रहस्य लोक विस जकां जाइ छले। आधुनिक युग में तकरा पुनः प्रतिष्ठित क हेतु ए जेना हिनक जन्म उषे काल में भेल।

हिनका जन्म क सम्बन्ध में एक घटना उल्लेखनीय अ १९५६ ई० क बड़ा दिन क छुट्टी में हम ऋषिकेश गेल र आश्रम में बड़ा धूम धाम सँ जेसस क जन्म तिथि मनाउ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गेल। कतिपय विदेशी साधक लोकनि स्वयं वजला जे पाश्चात्य देश में एतेक सुन्दर भावपूर्ण सुसंस्कृत समारोहक अभाव रहैत अछि। हमरा मोन में भेल जे साक्षात शिव रूप भरि सक विदेशी भक्त गण के प्रसन्न करक हेतु समारोह कयलन्हि अछि। ओकरे भोर में स्वप्न देखल एक नाटक भऽ रहल छै। सूत्रधार छथि स्वामी चिदानन्द। विषय अछि 'जेसस क जन्म स्वामी शिवानन्द जकाँ और देखल जे उषा काल में चिड़ै चुनमुनि क गुंजन सँ मुखरित नदी क कूल पर अपूर्व प्राकृतिक रंगीन छटा में एक ज्योतिर्मय अर्भक क आविर्भाव अपना मातृ गोद में।' बड़ आनन्द भेल। भोर होइते छलै नींद टूटि गेल। आनन्द क उल्लास में एकर अर्थ विचारऽ लगलौं। सूर्योदय होइते पहुँचलौं स्वामी चिदानन्द जी क पास आ अर्थ पुछलियेन्ह। ओ कहलन्हि 'आनो कतेक गोटे हिनका, कार्तिकेय, दत्तात्रेय, आ शिवक रूप में देखलखिन्ह अछि। तै कोनो आश्चर्य क गप्प नहिं, शुभ लक्षण थीक'।

तात्पर्य जे वालक में भगवान क एक विशेष अंश छलैन्ह हिनकर माय पार्वती अम्मल पाछाँ कहल करथिन्ह कि हिनका गर्भ में अविते हुनक विचार धारा उन्नत होमऽ लगलैन्ह। खराब विचार मन में नहिं उठैन।

बच्चा जन्महिं सँ सुगठित आ सुन्दर रहथि। प्रायः विधाता आगन्तुक धर्म संस्थापन कार्य क एक समुचित आधार गढ़ने छला ह। सम्वन्धि वर्ग ऐ आसाधारण वालक क आगमन सँ बहुत प्रसन्न छलाह। हिनक नाम राखल गेल कुप्पू स्वामी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शैशव

विगत जन्म गत पावथि सभटा
तत्तय बुद्धि संयोग।
यत्न शील भय सिद्धि क पथ में
फेर करथि ओ योग।
गि० अ० ६ श्लोक ४३

'होनहार विरवान के होत चीकने पात' हिन्दी में कहावत छं 'The child is the father of the man' अंग्रेजी में। तत्रतं बुद्धि संयोगं लभते पौर्व देहिकम्। गीता कहैत अछि

प्रथा अछि जे अनवद्य शरीर, नीक कुल शील आदि स्वर्ग सँ आयल जीव के रहैत छैन। ईश्वर क विशेष अंश भेने साधारणतः शरीरो में किछु आकर्षक गुण रहैत छै। कृष्ण तऽ से आकर्षण बहुत वेशी रहैन। आनो अंश विशेष, महात्मा आदि में से गुण रहैत अयलन्हि अछि। स्वामीजी क आकर्षक व्यक्तित्व सँ अनेको प्रभावित भेल छथि। हुनक डील डौल मुखाकृति आदि सभ में एकटा विशेषता छैन। सैह रहैन बाल्यो काल में।

कृष्ण क किछु किछु गुण हिनको बालकपन में रहैन। हुनका जकाँ नटखट। नीक संस्कार क एक पैघ निशानी। छो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवस्था में अपना दिस सभ के आकर्षण करक प्रवृत्ति चतुर शिशु के अनका सँ उलझक हेतु बुद्धि क प्रदर्शन करैत छोट उपद्रव करवै छै। हिनको तकरा वाद लोक जखन हँसैत चेहरा देखै छलेन्ह तऽ सभ विसरि हिनका प्यार करऽ लगैन्ह। दौड़वा धुपवा में अपना सहवयस्क में सभ सँ तेज, बलिष्ठ, चतुर रहने सबहक मुखिया रहथि। साधु, सन्यासी, भिखमंगा क प्रति छोटो अवस्था में बड़ा आदर भाव रहैन। और रहैन अपूर्व ग्रहण शक्ति, चटपट कोनों बस्तु सीखक सामर्थ्य।

हिनका दूटा और जेठ भाई रहथिन्ह। जखन घर में मिठाई तिठाई कोनो नीक चीज बनाओल जाइ तऽ अपन हिस्सा फुर्तिगर कुप्पू पहिनहिं चट कऽ अनको हिस्सो दफानथि। घर में बचलाहा रहै तकरा अपना संगी सभ में वांटि आवथि।

संगी हिनक रहैन सभ जाति क। ओना जाति भेद क कट्टरता ओइ दिनक तामिल में बहुत छलै। धिया पूता सभ ठाम ताहि नियम के किछु कम मानैत अछि। हिनकर समदर्शिता किछु और वेशी छलैन्ह। चेतन क डँटला पर रूसि रहथि किन्तु अछोप संगी के छोड़थि नहिं। भरिसक भविष्य क यथार्थ धर्म प्रचारक वीज तैखन निहित छलैन्ह। और निहित छलैन्ह ओ समदर्शिता जे रीति-रेवाज जाति-पाति क वाहर होइ।

बचपनों में हिनका काज भेटलैन्ह आराधना क। बाप रहथिन्ह बड़का पुजारी। कुप्पूक कोज रहैन फूल, बेलपात

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तोड़िकऽ आनव। पूजा क काल में चुपचाप वैसि मन्त्र पाठ सूनल करथि। कीर्त्तन क काल में सभ क संग कीर्त्तन करऽ लागथि। रामायण, भागवत आदि क कथा होइ तऽ खूब ध्यान सँ सूनऽ लागथि। वचपन में हिनकर नाम कीर्त्तन बड़ा भाव सँ मधुर भेल करैन्ह।

कुप्पूक हृदय बच्चो में बड़ा कोमल छलैन्ह। मधुर आदि भेटिते दौड़ि क आन बच्चा सभ के ताकि आनथि आ अनका खोएवा में अपनो खेवा सँ वेशी आनन्द होनि। घर बन्द क कऽ हलुआ खेवाक आदति हिनका कहिओ ने रहलैन्ह। भिख मंगों क ई विशेष कदर करैं छलखिन्ह।

जहाँ कोनों भिखमंगा आयल कि बहुत दिन पर घूरल सम्बन्धी जकां दौड़ि कऽ ओकरा लग जाथि। कौखन कऽ ओकरा घर में वैसा कऽ भोजन करावथि। यदि ओकरा भजन कीर्त्तन अवैत रहै तखन देर सँ छुटकारा भेटै। ऐ तरहें कीर्त्तन करेवाक आदति पाछाँ बहुत बढ़ि गेलैन आ ऋषिकेश क सायंकाल क सत्संग में भाग लेनिहार जनैत हेता जे कतेक गोटे कतेक काल ओइठाम कीर्त्तन करै छथि।

कुप्पू वचपनों में बड़ा उदार छलाह। भिखमंगों के अन्न पानि देबा में संकोच नै करै छलाह। बाल संगी सभ के खूब खोअवै पीअवै छलाह। आगाँ चलि कऽ हिनकर उदारता अलौकिक भऽ गेलैन्ह।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बचपन में जे संत महात्मा क कहानी सुनलेन्ह तकर असर पड़लन्हि। माय बाप सांझ कऽ हिनका तुष्ट करक हेतु अनेक पौराणिक कथा पिहानी कहल करथिन्ह। संस्कारानुकूल परिस्थिति भेटै छै, तकर एक बड़का सबूत। अन्तर्निहित तीव्र धार्मिक संस्कार के अही सभ सँ पुष्टि भेटलैन्ह।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाल्य-काल

अनके जकाँ ई हो स्कूल में दाखिल भेला किन्तु अनका सँ किछु विशेषता छलैन्ह। स्कूल जेबा में अनाकानी करक अपेक्षा हिनका हर्ष होइ छलैन्ह। जेठ भाई लोकनिकपढ़ नाइ सूनिकऽ गिनती वा अक्षरक ज्ञान भऽ गेल छलैन्ह। मास्टर लोकनि के एक सुडौल आ तेजस्वी छात्र भेटलैन्ह जिनका पढ़वा में मोन लगै छलैन्ह। जे कहल जाइ छलैन्ह झट दऽ बूझै छलखिन्ह। एकौ बेर सुनने वस्तु स्मरण रहै छलैन्ह। समय क मूल्य ओहू अवस्था में बुझै छलखिन्ह आ आन धीयापूता जकाँ समय के एम्हर ओम्हर में नै विता, ओकरा सदुपयोग करै छलाह। तकरे परिपक्व रूप छिऐन आव हिनक उपदेश 'जीवन स्वल्प अछि। समय बीतल जाइये। उठू, जागू, अपना के जानू'।

सुबुद्धि रहने अपन पाठ शीघ्रहि स्मरण भऽ जाइ छलैन्ह आ तखन उत्सुकता वा स्वभाव सँ आगूक पाठ पढ़ि लै छलाह। तैं अपना वर्ग सँ बहुत आगूक लोकक समकक्ष जकाँ रहै छलाह। एहैन प्रतिभा आनो महापुरुष के रहैन जेना गौतम बुद्ध के, रामभद्र के।

कुप्पू बराबरि क्लास, में फस्ट करथि। खेल खूद में सेहो आगू रहला सँ, इनाम में खूब किताब भेटै छलैन्ह। जकरा पढ़वा में हिनका बहुत अभिरुचि छलैन्ह। आगू चलि कऽ से अभिरुचि हिनका केहैन विद्वान् बनौलकै न जे तीन सौ विभिन्न विषय पर गम्भीर ग्रन्थ लिखने छथि। हिनका ग्रन्थक अनेकों अनुवाद देशी आ विदेशी भाषा में भेल छैन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिनका क्षमता में शिक्षक लोकनि के कतेक निष्ठा रहैन तकर प्रमाण अछि हिनकर स्वागत भाषण जखन हिनका स्कूल में मद्रास क लाट साहेब गेल रहथिन। तखन चौदहे साल क छलाह। स्वागत गान गौलन्हि, भाषण देलन्हि एक विशिष्ट सभा में, निर्भीक भेल।

अपना वर्गक परीक्षा नीक जकाँ पास करथि। खेल कूद में आगू रहल करथि। संगीत सँ अभिरुचि छलैन। विद्यालय में नाटक आदि क आयोजन भेने अगुआ भऽ कऽ भाग लेथि। एक बेर सेक्सपिअर क मध्य-ग्रीष्म निशा'क स्वप्न में हेलेना क पार्ट लेलन्हि।

वचपनों क जीवन में अलौकिक उत्साह, स्फूर्ति आ प्रतिभा छलैन्ह तकरा कम लोक लक्ष्य कऽ सकल।

उच्च विद्यालय में प्रवेश करैत गुण गण वेशी स्फुट होमऽ लगलैन्ह। ताहि दिन नवीन प्रणाली क डाक्टरी क पढ़ाई कम प्रचलित भेल छलै। जन सेवाक हिनक भाव अन्त तल सँ पुकार केलकैन्ह आ डाक्टरी पढ़ब प्रारम्भ कयलन्हि। अन्तस्थ अभिरुचिक कारण पढ़वा में वेशी मोन लगैन्ह आ प्रथमे वष सँ पैघ-पैघ डाक्टर अध्यापक लोकनि हिनक सहायता लेथि। समयक मूल्य बूझल रहैन्ह आ संग में एकटा नोट बुक राखि जे उल्लेखनीय बात देखथि से नोट कऽ लेथि।

अपना स्वास्थ्य क बराबरि ख्याल रहैन। नित्य प्रति प्रातः काल व्यायाम करथि, सांझ कऽ खेल धूप में भाग लेथि। खेल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धूप में पदक लेवा में आगू रहथि। पढ़वा में से हो प्रथमे भेल करथि।

एकर रहस्य अपनहिं आगू बजलाह 'नियमित जीवन'। नियमित जीवन पर बहुत जोर दैत रहलाह अछि। जीवन में सफ़लता क से एक रहस्य, कुञ्जी थीक।

हिनक सहपाठी सभ आब स्वीकार करै छथि जे ताहू दिन होनहार क बीज हिनका में देखल जाइ छलैन्ह। दू वर्ष क पढ़ाइ एकहि वर्ष में समाप्त भऽ जाइ छलैन्ह। परीक्षा सँ किछु दिन पूर्वहिं पढ़नाइ छोड़ि मनन शील भऽ जाइ छलाह तथा परीक्षा में सभ विषय में प्रथम नम्बर आनथि। धारणाशक्ति उत्तम भेने जे वस्तु एक वेर सूनथि तकरा सुविधा सँ दोहरा सकै छलाह। हिनक नम्र स्वभाव आ सच्चरित्रता सँ सभ सन्तुष्ट छलाह।

अहि समय क एक घटना उल्लेखनीय अछि। व्यायाम क अभिरुचि छलैन आ तदर्थ हिनक शिक्षक छलखिन्ह शाम्ब शिव अय्यर। शाम्बशिव अय्यर अछूत छलाह आ दू दिन चारि दिन हुनका पास गेला क वाद लोक प्रतिवाद केलकन्हि जे ब्राह्मण भऽ कऽ अछूत क पास सिखै छी। कुप्पू स्वामी अहि पर गम्भीर बिचार कयलन्हि। हिनका बूझि पड़लन्हि जे पूजा घरक मूर्त्ति कूदि कऽ शाम्बशिवक हृदय में चल गेलखिन्ह अछि। तुरन्त जाकऽ धोती, मिठाइ आ माला लऽ कऽ हिनकर पूजा कयलन्हि। हुनका साष्टाङ्ग प्रणाम कयलन्हि। जाति भेदक परदा हटलन्हि। पाछू सभ के समान भाव सँ सेवा करक रास्ता साफ भेलन्हि। ओहैन गुरुभक्ति क फल, उन्नति आ बोध भेटलैन्ह। पाछाँ ओ शाम्ब शिव अय्यर हिनके सँ सन्यास दिक्षा लऽ सदाशिवानन्द भेला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पदार्पण

उच्च कक्षाक चिकित्सा क उपाधि भेटला क बाद श्री कुप्पू स्वामी जन समाज के उपयोगी हेवाक रास्ता खोजऽ लगला। बराबरि क्रियाशील रहक स्वभाव छलैन्ह। सेवा सँ अघाइत नै छलाह। एक पूर्व परिचित डाक्टर क संग मीलि रोगी क उपचार में लगला। किन्तु ताहि सँ अपना सन्तोष नहिं भेलैन्ह। लोक के आधुनिक चिकित्सा विज्ञान वेशी नहिं बूझल छलै। लोक चिकित्सा पद्धति बूझौ, ओइ सँ लाभ उठावौ तदर्थ 'आम्ब्रोसिया' नामक पत्रिका चलौलन्हि। अपनहिं ओकर सम्पादक, व्यवस्थापक, किरानी सभ छलाह। पत्रिका में आयुर्वेद क घरेलू नुस्खा सेहो सामिल रहै छलै। ऐलोपाथिक नवीनतम आविष्कार क वस्तु तऽ रहिते छलै। साधारण जनता क हेंतु बहुत उपयोगी छलै।

पत्रिका में द्रव्य क आवश्यकता होइ छलैन्ह। सुविधा क हेतु मद्रास में एक अंगरेज क दवाखाना में रहि गेला। काफी खटनी होनि। दवाखाना क दवा दारू रोगी आ हिसाव किताव क संग एम्ब्रोसिया क व्यवस्था सेहो करक होनि। दू अंगरेज डाक्टर हेलर आ दमड़ी जिनकर ओ दवाखाना छलैन्ह आपस में लड़ि गेलाह। कुप्पू स्वामी अपना विकास क विशद क्षेत्र तकै छलाह। मलाया सँ पत्राचार प्रारम्भ कयलन्हि। किछु दिनक बाद मलाया विदा भऽ गेला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्थान

विवश जकां खीचय हुनका जग पूर्वक सभ संस्कार ।
योग क पथ आराधि करथि ओ शब्द ब्रह्म के पार ।।

गी० अ० ६ श्लोक ४४

भगवान क अदृश्य हाथ सभ के अपना व्यवस्था मोताविक घुमवैत रहैत अछि। हुनकर सूक्ष्म क्रिया कलाप सहजहिं बुझवा में नै अवैत छै। बहुत दिन क बाद विश्लेषण सँ कौखन बुझबा में आओत जे भविष्यक अभिनय के ओ सूत्रधार तैयारी करबै छलाह।

श्री कुप्पू स्वामी क जीवन में ईश्वरेच्छा क प्रवेश वाल्ये काल सँ लक्षित होइ छलैन्ह। मलाया में एक विशद सेवा क्षेत्र क अनुमान हिनका बरबस खींचऽ लगलैन्ह। अपन सीमित कार्य क्षेत्र सँ असन्तोष छलैन्ह। आत्म विकास क विशद स्वतन्त्र क्षेत्र तकै छलाह। तैं मलाया में अपना सन व्यक्ति क आवश्यकता क सूचना पावि जेवाक हेतु आतुर भऽ.गेला।

किन्तु स्वजन परिवार सबहक बड़ प्रिय छलखिन्ह। माय जिविते छलखिन्ह। पहिने हुनका सभ के बहुत आनाकानी देखि श्री कुप्पू स्वामी धीरे धीरे हुनका लोकनिक आग्रह के शिथिल कयलन्हि। समुद्र पार करक अड़चन तोड़लन्हि। सबहक आशीर्वाद लऽ कऽ चलला सुदूर मलाया अपना के पूर्णतः भगवान क हाथ में सौंपि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मलाया जाइत खन यात्रा क असुविधाक अंदाज नहिं छलनि। खूब अधिक कऽ लड्डू संग में रखने रहथि जे खाथि आ पानि पीवथि। जहाज सँ उतरिते सोझे अपना काज क अन्वेषण कयलन्हि आ जोहोर वोहरू में डा० हारोल्ड पिअर्सन्स क दवाखाना क अध्यक्ष भेला।

शीघ्रहि ओइठाम सबहक बड़ प्रिय लोक भऽ गेला। डा० पिअर्सन्स हिनका तीन गोटे क काज एकसरे करैत देखि सहायक आदि नियुक्त कऽ देलखिन्ह। निम्न स्तर क कार्यकर्त्ता लोकनिक प्रति विशेष सहानुभूति रहला सँ ओ सभ हिनका बड़का बन्धु जकां बूझैन। हिनकर धाख ततेक रहैन जे छुट्टीओ क दिन में बैंक क मैनेजर हिनका चेक पर रुपया देथिन, खुजलो जहाज हिनका वास्ते रूकैन। अधिकारी वर्गक तऽ परम विश्वस्त छलाहे।

हिनकर मलाया क जीवन आगामी जीवन क एक पूर्वाभास छलैन। मलाया में कुल दस साल रहलाह, सात साल सेरम्बनक अस्पताल में आ तीन साल जोहोर वोहरू में। लिखबाक अभ्यास बरावरि छलैन्ह आ स्वास्थ्य विषयक पत्र पत्रिका में बरावरि अपन लेख देल करथिन्ह। रोयैल इन्सटिट्यूट औफ पब्लिक हेल्थ आ रोयाल सैनीटरी इन्सटीट्यूट के सदस्य रहथि। स्वास्थ्य विषयक, कतेक ग्रन्थ जेना 'घरेलू चिकित्सा, 'स्वास्थ्य आफल' आदि छपौलन्हि किन्तु एतेक सँ हिनका जीवन यापन क शैली क आभास नै भेटत। तकरा हेतु तऽ हिनका नित्य प्रति क जीवनक झलक चाही।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से उपलब्ध भेल हिनकर तत्कालीन भनसीया नृसिंह दिक्षित सँ। किछुए दिन क हेतु नृसिंह दिक्षित हिनका संग छलखिन्ह। बूढ़ भेला पर नृसिंह पुनः अपना पुरना मालिक लग सन्यास दीक्षा क हेतु अयलाह वा ऋृषिकेश में रहलाह।

नृसिंह क संग हिनक व्यवहार नौकर जकां नहिं बल्कि मित्र जकां छलैन्ह। संगहि बैसा कऽ खोआएब, सूतबा बैसवा में कोनो हिचक नहिं रहऽ देव; कौखन कऽ नीक कपड़ा लत्ता पहिरा कऽ संगहि टहलवा क हेतु लऽ जायव आदि बात सँ नृसिंह अभ्यस्त नहिं छलाह। क्रमशः अपना नवीन मालिक क आचार व्यवहार सँ परिचित भेलाह जिनकर व्यसन छलैन्ह उदारता, जिनकर आमोद छलैन्ह सहानुभूति।

उदारता आ सहानुभूति क हेतु मलाया में प्रसिद्ध छलाह कुप्पू स्वामी। केओ हेड़ायल भूतिआयल पहुँचि जाय हिनका लगतऽपूरा मदति भेटै छलै। भारतवासी के विदेश गेला पर की कठिनता होइ छै से अपने बुझने छलखिन्ह। जहां कोनो भारत-वासी मदति क हेतु पहुँचलैन कि मोम जकां पिघलिकऽ ओकरा वास्ते किछु उठा नै रखै छलखिन्ह। ओकरा अपना घर में राखब नौकरीक हेतु जहां तहां कोशिश करब, ओकरा स्थिर कऽ देव तऽ हुनका संग साधारण घटना भऽ गेल छल।

ओना साधारणतः बहुत असाधारण रूपें उदार छलाह। एक बेर एक भिखमंगा सड़क पर घरक आगू किछु खयबाक हेतु मंगलकैन। ओकरा वेशी खिन्न आ प्रताड़ित देखि संगहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घर लऽ जाकऽ अपना लोकनिक खेनाइ में सँ कपचि कऽ ओकरा भरि पेट खोऔलन्हि। चलक काल दोसर सांझक हेतु होटलऽक चाज भरि पैसा दऽ कऽ ओकरा विदा कयलन्हि।

भिख मंगा लोकनिक हेतु किछु खुदड़ा व रावरि संग रहै छलैन आ एक आध पैसा देवा में हिचकिचाहट होइ छलैन तँ एकन्नी दुअन्नी भिखमंगो के दै छलखिन्ह। तहिना हिनका ओइ-ठाम अतिथि सत्कार होइ छल।' 'अतिथि देवो भव' हिनका बचपने सँ बूझल छलैन्ह। धीयो पूता में साधु, सन्यासी क हेतु बड़ आदर भाव छलैन्ह। मलाया में कौखन जौं साधु सन्यासी भेटि गेलैन्ह तऽ ओकरा बड़ खातिर करै छलखिन्ह। कैक वेर साधुक स्वयं सेवा करैत उदारता सँ चलऽ क काल विदाइ देथिन्ह।

ओही ठाम एक साधु सँ वेदान्त पढ़क झोंक भेलैन्ह। जतेक धार्मिक ग्रन्थ दोकान में भेटलैन्हि सभ खरीद कऽ लऽ अनलन्हि आ पढ़ैत पढ़ैत धार्मिक ग्रन्थ क अपन एक खासा पुस्तकालय वना लेलन्हि। किछु कऽ आसन, प्रणायाम ताही समय में प्रारम्भ कयलन्हि। किछु दिन कीर्त्तन करक ओही समय में प्रवल आकांक्षा भेलन्हि। हारमोनियम मास्टर राखि हारमोनियम सिखलन्हि। धीया पूता के एकट्ठा कय कीर्त्तन करब प्रारम्भ करथि, दोस्त महिम क ओइठाम कोनो जलसा तलसा में विशेष कऽ। एवं प्रकारें भविष्य क महात्माक जीवन क मलाया एकटा शिक्षा क समय छलैन्ह।

अहि सम्बन्ध क एक घटना उल्लेखनीय अछि। एक अछूत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क स्त्री के प्रसव पीड़ा भेलै। ओ छल शहर क कात में एक गंदा झोपड़ी में। श्री कुप्पू स्वामी बिना फीस क भरि राति ओकरा ओइठाम बैसल रहला आ जखन भोर में ओकरा बच्चा भेलै तँखन घर लौटला। गरीबक हेतु कतेक त्याग आ निस्वार्थ प्रेम छलैन्ह।

तँ यश गौरव आ सम्पत्ति क संग मलाया में आध्यात्मिक विकास भेटलन्हि। संसार के परख क, आत्म निरिक्षण क अवसर भेटलन्हि आ तकरे फल स्वरूप डेग बढ़ौलन्हि आत्म-साम्राज्य पर बिजय करक हेतु।

—:(०):—

१ अस्तित्व ईश्बरेटाक छैन। और सब किछु आडंबरे थीक।
२ सभ किछु ईश्वरेक प्रगट रूप छिऐन।
३ ईश्वर ककरो दखल में नैं छथिन्ह। हुनका ओईठाम सभ के समान अधिकार छै।
४ सम्पूर्ण सृष्टि ईश्वरेक परिवार छिऐन।
५ यथार्थ में मानव मात्र एक थीक।
६ हम सभ एक छी। एक दिव्य ज्योति।
७ शान्ति आ मुक्ति हमरा लोकनिक पैर थिक।
८ प्रेम आ आनन्द थीक दूनू आँखि।
९ आत्मज्ञान थीक मुँह।
१० पूर्णता हमर सर्वस्व, अन्तरात्मा थीक।
११ ईश्वर के कोनो आकार नै छैन किन्तु सभ आकार में वैह छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नमस्ते मलाया

दुःख जन्म, दुःख जाया, तन दुख,
दुखमय बड़ संसार।
उठू उठू आवहु हे साधक
करक मृत्यु अछि पार
जननि पिता नहिं बन्धु सहोदर
अपन वित्त आगार।
उठू उठू आवहु हे साधक
करक मृत्यु अछि पार।
काम क्रोध अछि लोभ चोर छिपि
करक ताक में वार।
उठू उठू आवहु हे साधक
गहू ज्ञान हथियार ॥

नमस्ते मलाया नहिं, नमस्ते दुनियांदारी। श्री कुप्पू स्वामी क मलाया छोड़ब अपना त्याग क महत्ता में सिद्धार्थ क राज छोड़वा सं कम नहिं। जकरा किछु नहिं छै, ओ छोड़त की। यथेष्ट सम्पत्ति, मान, प्रतिष्ठा आ आरामक जीवन क त्याग ओइ लक्ष्य क प्रति, जकर अनुभव नहिं भेल रहै छै, एक तीव्र अनुराग क सूचक थीक। बहुत पुंजीभूत पुण्य क प्रभाव सँ भोग क प्रति विरक्ति होइ छै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मलाया सँ ओना साल दू साल पर गाम अवैत छलाह। बन्धु वांधव सँ खूब भाव छलंन्ह। चिट्ठी पत्री वरावरि अबैत छलंन्ह। किन्तु मलाया हुनका लोकनि क विचार सँ नहिं छोड़लन्हि। भारत लौटि क अयला पर हुनका लोकनि क भेंटो नहिं केलकिन्ह। परिवार क बन्धन क सूत्र के तोड़नहिं अनन्त क पथिक लोक वनि सकैये।

बीसवीं शदी क श्री कुप्पू स्वामी क मस्तिष्क में सन्यास क बात कियैंक अयलन्हि ? ओहो तऽ अनके जकां सांसारिक जीवन वा पारिवारिक जीवन में रहिते धर्मार्जन कऽ सकैत छलाह। प्रत्युत कहू जे करिते छलाह। भजन, कीर्त्तन, दान, पुण्य, ध्यान, जप, स्वाध्याय क संग संग दीन पीड़ित क सेवा करिते छलाह किन्तु साधारणतः संसार क आसक्ति सँ हमरा लोकनि अहो सँ जकड़ि कऽ रहबाक दलील तकैत रहै छी। जिनका भगवत्कृपा सँ व्यवहार क असारताक निःश्रेयस के सिद्ध करक व्यवहार क अक्षमता क बोध होइ छैन्ह ओ भला दुख दुविधा क जड़ि व्यवहारिक जीवन के केना धेने रहि सकै छथि।

तैं छोड़लन्हि श्री कुप्पू स्वामी यश, मर्य्यादा, धन, वीत आ एक निश्चित आराम में रहक जीवन। रुपया, पैसा, चीज, वस्तु बहुत किछु मलाये में वटलंन्ह। वकिये जे जहां रहैन पेटी सभ में भरने भारत पहुँचला। सभ वस्तु लेने सीवे एकटा संगी क घर आवि, सभ वस्तु मित्र क अभावे में हुनका घर पर राखि मित्र क हेतु एक पुर्जी छोड़ि, परिव्राजक क जीवन ग्रहण कयलन्हि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छोड़ि बन्धु घर चलला योगी
कोन अदृश्य क टान।
तुच्छ बूझि धन, सम्पत्ति छोड़ल
छोड़ल यश. कुल, मान।
केहेन वेश, आहार रहत नहिं
रोकल सोच, विचार
लोक क आर्तनाद जनु कयलक
क्षितिज क पार पुकार॥
जेसस, बुद्ध, स्वयं शंकर जनु
अपन कहल हो बात।
त्याग मात्र ओ मूल मन्त्र जे
नूतन रचय प्रभात।
चलू चलू अति मानव बढ़ि बढ़ि
छितरक हेतु प्रकाश।
धन्य प्रशस्त मार्ग श्रेयस्कर
सभ तजि आशा पाश।

घर छोड़ि देवाक मानसिक विश्लेषण करू। ओना तऽ लोक बहुत सँ झगड़ो भेला पर घर छोड़ि दैत अछि। घर में खेवाक नै किछु रहलै तऽ पेट क हेतु गेरुआ पहिरि लैत अछि। किन्तु श्री कुप्पू स्वामी के कोनो तरहक वस्तु क अभाव नहिं छलैन्ह प्रत्युत भविष्य प्रभूत सम्पत्ति क, प्रतिष्ठाक स्वागत थार लेने आगू बढ़ल अवै छलैन्ह। तखन तऽ बुझलखिन्ह जे:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जन्म दुख छी, मरण दुख छी
दुख जाया, परिवार।
उठू वीर अध्यात्म शिखर हित
छी दुख सब संसार।
माय, बाप नहिं बन्धु सहोदर
देत शान्ति आगार।
धन, वैभव उलझावय दुख में
चलू छोड़ि संसार।
काम, क्रोध, मद, लोभ देह में
तस्कर करय विहार।
ज्ञान, श्रेय, यश, सौरभ छीनत
चलू छोड़ि संसार।

'अभाव' सन्यास वा 'श्मशान' सन्यास बला क वैरा[ग्य] तीव्र नहिं होइ छन्हि। कुप्पू स्वामी क वैराग्य तीव्र छलैन्ह, प्रा[रम्भ] सँ। अपन चीज वस्तु छोड़ि पहुंचला वनारस। विश्वनाथ[क] दर्शन कयलन्हि। पुनः परिव्राजक जीवन क कष्ट उठबैत प्रा[रम्भ] कयलन्हि पर्य्यटन। भाषा वैषम्य, मांग क आदति नहिं, [...] सहक आदति नहिं, तखन जे भेटि जाय सैह खायब, जतहि [...] सूतब कतेक पैघ तपस्या छै से अन्दाज कैल जा सकैये। श्री [...] स्वामी क हृदय में अपना ध्येय क हेतु ज्वलन्त लगन छल[न्हि] आन कष्ट क गणना नहिं करथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करीव डेढ़ दू साल देश भरि भ्रमण कयलन्हि। कतौ दोसर वेर भोजन करक हेतु नहिं ठहरथि। जतहि जे भेटि जान्हि खा लेथि। भोजन देनिहारक हेतु प्रार्थना करव दैनिक नियम छल-न्हि। कतऽ सूतक होनि, कतऽ रहथि, की खाथि से पूछक नहिं काज मंगवा क अभ्यास नहिं हो आ तखन यदि विनु रूपया पैसा क भारत भरि पैदल भ्रमण करक हो तऽ कतेक पैघ तपस्या छिऐ से अनुमान करू। नासिक, पूना, पण्डरपुर, बनारस आदि घूमि फिरि एक दिन महाराष्ट्र में नर्मदा नदी क तट पर एक पाथर क खण्ड पर वैसल वैसल मुन्हारि साँझ भऽ गेलैन्ह। जगह जङ्गलाह छलै आ लोक क आवागमन विरले भऽ गेल छलै। आस पास में वस्ती नै छलै आ हिनका राति कतऽ वितायव से विसरि गेल छलैन। एहने समय में संयोग सँ ओमहर दऽ कऽ एकटा पोस्ट मास्टर जाइत छलाह। दूर सँ विजन में लोक देखि लग जा कऽ वैसकलखिन आ अपना संग घर लेने एलखिन। श्री कुप्पू स्वामी लगला हुनका सेवा में। गाय के चारा देथिन, पोस्ट मास्टर थाकि कऽ आवथि तऽ हुनकर पैर जँतथिन आ पोस्ट मास्टर क कतेक प्रार्थना केला पर। आखिर वैह पोस्ट मास्टर हिनका आकृति आ आचरण सँ बहुत प्रभावित भेला पर हिनका ऋृषिकेश में रहक विचार देलखिन्ह आ टिकट कटा देलखिन। मई १६२४ ई० में श्री कुप्पू स्वामी पहुँचला ऋृषिकेश।

ऋृषिकेश पहुँचला पर हिनका बहुत आनन्द भेलनि जेना युग-युग सँ श्रान्त पथिक के अपन घर भेटि गेलि होनि। कल-कल करैत निर्मल जाह्नवी क प्रबाह, दूर-दूर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तक हरियर हरिथर गाछ सँ भरल हिमालय क विशाल पर्वत श्रृंग आ सभ सुविधा रहितो हाट बाजार क हो हल्ला सँ दूर हिनका रहवा क हेतु एक आदर्श स्थान भेट गेलैन्ह। प्राचीन काल सँ ऋषिकेश आर्य संस्कृति क तपो भूमि रहल अछि। मनुष्यक विकासक हेतु पृथ्वी पर सभ सँ उत्कृष्ट भूमि उत्तराखंड क ईहो एकटा अङ्ग अछि। एतहि ध्रूव तपस्या कयलन्हि आ चारू भाइ रामचन्द्र। ऐ ठाम क वातावरण में साधु संत क सांस भरल अछि।

ऋषिकेश पहुँचि कऽ श्री कुप्पू स्वामी, गंगा आश्रम क पार चरण दास क धर्मशाला में ठहरला। दोसरा दिन भोरे ओ संन्यासी लोकनि क वीच स्वामी विश्वानन्द के देखलन्ह हुनका तेजपूर्ण मुखाकृति सँ प्रभावित भऽ हुनका पैर पर खसला बहुत प्रेम पूर्ण कथा वार्ता भेलनि। पूछ ताछ केलाक बाद निर्णय भेलनि जे श्री कुप्पू स्वामी सन्यास लेथि।

श्री कुप्पू स्वाभी क तीव्र वैराग्य छलन्हि, अभाव या श्मशान वैराग्य नहिं। मलाया सँ हिमालय तक अपन वैराग्य अक्षुण्ण रखने छलाह। आन आन महापुरुष जकां एक लोकोत्तर चरित्र देखावक हेतु ईहो गेरूआ कपड़ा धारण कयलन्हि।

देखथि ब्रह्म विशद के मानव
कय तप, संयम, ध्यान।
होन्हि जखन मल रहित चित्तनिज
पावन पावथि ज्ञान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तप, संयम, वैराग्य जनिक पथ
बनति ब्रह्म, सम्राट ।
परं तत्व गहि हृत्तल में निज
ज्योर्तिमय विभ्राट ॥
दृढ़ तत्पर लक्ष्य क हित अनुछन
करथि थोड़ आहार ।
एकाकी, अनुरक्त कतहु नहिं
पावथि ब्रह्म विहार ।

प्रथम जून १९२४ ई० क श्री कुप्पू स्वामी सन्यास दीक्षा लेलनि। दीक्षा देनिहार छलखिन्ह स्वामी विश्वानन्द। हिनका हेतु विरजा होम हिनक आचार्य गुरु कैलाश आश्रम क महा-मण्डलेश्वर स्वमी विष्णुदेवानन्द महाराज केलखिन्ह। हिनक नवीन नाम भेलन्हि स्वामी शिवानन्द सरस्वती। जे स्वामी हिनका नामक पाछू लागल छलैन्ह से आव पहिनहिं लागि गेलैन्ह। तीव्र वैराग्य आ सूक्ष्मक कारण हिनका हेतु गेरुआ कपड़ा आव-श्यक नहिं छलन्हि किन्तु परम्परा क मर्य्यादा राखक हेतु हो वा एक खसैत आदर्श क उत्थानक हेतु अथवा घटना चक्र क नियन्त्रण केनिहारि नियतिएक कार्य कलाप श्री कुप्पू स्वामी शिवानन्द भऽ गेला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तपश्चर्या

धन्य मनुज ओ हिमगिरी लग जे
वैसि जाह्नवी तीर।
निर्विशंक ध्यानस्थ रहथि नित
विसरल भोजन चीर।
धन्य मनुज ओ कर्म, द्वन्द तजि
जे नश्वर संसार।
संतोषामृत तृप्त करथि नित
आत्मा बीच विहार।

सन्यास लेला पर जन सँमर्द सँ दूर ऋषिकेश शहर सँ दू मील दक्षिण कोलघाट में ठहरला। ओहि ठाम बराबरि गम्भीर ध्यान क अवसर भेटलन्हि। काली कमली बला क क्षेत्र सँ भिक्षा क दालि रोटी लेबक हेतु प्रतिदिन रौदो पानी में दू मील चलि क आवक होनि। कौखन कऽ रस्ते में कोनो सेठ क भण्डारा भेला पर दालि रोटी भेटिजान्हि आ ओतहि सँ घूरि जाथि। सिन्धी क्षेत्र में रोटी दालि क संग नूनो मिरचाइ दैत रहै वा नेपाली क्षेत्र में एक विशेष वूट क दालि बनवै। चन्द्रभागा नदी लग कहियो कऽ मिस्सी रोटी बांटल जाइ। प्रारम्भ में कहिओ कऽ अहू सभ ठाम जाइत रहथि। किछुए दिन में स्वाद पर ततेक वेशी निग्रह भऽ गेलैन जे अहू सभ तरहक विलास क आवश्यकता नै बुझना गेलैन। ध्यांने में वैसल नीक लगैन। स्वर्गाश्रम आ लक्ष्मण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूला क बीच बला कुटी में जखन रहथि तखन एकहि दिन दू चारि दिनक हेतु रोटी आनि कऽ राखि लेथि आ सुखा गेला पर गंगा जल में भिजा भिजा खाथि। लक्ष्मण भूला में ठहरला तऽ केवल खिचड़ी आ मिरचाई पर रहि लेथि।

ऐ सब निग्रह क तीव्रता पूर्वक राजकीय ऐश्वर्य क उपभोग सँ तुलना पर अनुमान कऽ सकै छी। कोलघाट सँ किछु दिनक हेतु ब्रह्मानन्द आश्रम में नीचा क एक टूटल फाटल कोठरी में रहला। ऐ ठाम बराबरि गंगा आ हिमालय नजरि पर रहथिन्ह तैं अयश आ ब्रह्मानन्द आश्रम सँ लक्ष्मण भूला में सत्य सेवाश्रम क स्थापना कय किछु दिन ओतहि रहला। ऐ ठाम अपना तपस्या क संग निस्वार्थ सेवा करक अवसर होन्हि। बद्री केदार क यात्री वा स्थानीय लोक क ताहि सँ बहुत उपकार होइत छलै। किन्तु अही समय में एकान्त वास क ईच्छा तीव्रतर भेलंन्ह आ सत्य सेवाश्रम सँ हटि कऽ लक्ष्मण भूला आ स्वर्गाश्रम क बीच एक कुटी में रहऽ लगला। कुटी की छलै दू कात ढहल दिबाल आ ऊपर सँ लत्ती फत्ती आ गाछ वृक्षकच्छायां। ओहू समय में सांप, बिच्छू भरल रहै छलै। केओ बाधा ने दै छलैन्ह। कौखन कऽ भिक्षा क हेतु बहराइ छलाइ, आत्मानन्द वेशी भेट गेने भरिसक आन वस्तु क चिन्तो नहिं छलैन।

स्वर्गाश्रम क अधिकारी लोकनि एवं किछु साधु सन्त आग्रह केलकन्हि जे स्वर्गाश्रम में चलि कऽ रहथि आ आग्रह मानि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर्गाश्रम क १११ न० कुटी में रहऽ लगला। वर्तमान आश्रम में अयवाक पूर्व धरि ओही कुटी में रहथि।

एखन तक जे लीखल अछि ताहि सँ हिनक तपस्या क आभास मात्र भेटल अछि। हिनका नित्य प्रति क कार्यक्रम पर दृष्टिपात केने हिनका संयम क कठोरता क किछु अनुमान हैत। ओना तऽ—

छला निरत नित वेद वाक्य में
छलैन भीख संतोष।
एक मात्र कौपीन छलैन तन
नहिं विषयादिक दोष।
संयत छलैन सकल इन्द्रिय गण
धन ख्याति क नहिं चाह।
आत्मानन्द तुष्ट रहि सदिखन
बनल छला नरनाह।

किन्तु एक बात स्मरण राखक अछि जे कौखन कोनो साधना में एकांगी विकासी क पक्षपाती नहिं छलाह वा कोनो साधना क अति करवाक पक्ष में नहिं छलाह।

जीवन क प्रारम्भे सँ योग समन्वय हिनक सिद्धान्त छलैन आ केना प्रगति होइत अछि तकर हेतु दैनन्दिनि रखैत छला। दैनन्दिनि अपना ऊपर, मन क ऊपर एक लगाम क काज करै छं। हिनका साधना क झलक ताही सँ भेटितों अछि। अपने तऽ कहिओ किछु बजला नहिं।

Dr: Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्यान करैत छला, बहुत ध्यान। आठ घंटा, बारह घंटा, सोलह घंटा तक। कौखन कऽ सभ काज, अध्ययन, दवा दारू आदि छोड़ि ध्यान करैत छला। कौखन कऽ सभ छोड़वा क तात्पर्य छलैन जे कार्य सँ आसक्ति नहिं हो वा कायक धुन में ध्यानक सर्वश्रेष्ठता विसरे नहिं। जाड़क दिन में वेशी ध्यान करैत छलाह।

कौखन कऽ मास, पन्द्रह दिनक हेतु निनु ककरो कहनहिं, स्वर्गाश्रम सँ निकलि गंगा क काते काते हरिद्वार सँ मेरट तक मधुकरी वृत्ति पर मौन रहि कऽ बौआइत छलाह। अहि साधना सँ भगवान क व्यापकता बुझवा में सहायता होइत छै। हुनक कृपा केना सहायता करै छै से बुझवा में अवै छै। हुनका पर निर्भरता बढ़ै छै।

स्वामी जी क शब्द कोष में घृणा नामक शब्द नहिं छलैन। मलाया में रहथि तखन मेहतर क झोपड़ी में ओकरे खाट पर दवा दारू करक हेतु राति कटलनि। दुष्ट के, छोट के, वा अछूत के सेवा करवा में कोनो हिचकिचाहट नहिं होइत रहैन। प्रारम्भ में आन साधु क कपड़ा खींचब वा पानि आनि देव हिनका वैसाड़ी क व्यवसाय छलैन। कैकटा हैजाक रोगी क रद्द दस्त अपनहिं साफ करथि। जाति पाति वो छूआछूत क ढोंग में हिनका कहिओ निष्ठा नहिं रहलनि। अहि सभ साधना सँ सभ में भगवान देखवा में सुभीता होइ छै, द्वन्द हटै छै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वभाव रहलैन बराबरि बच्चा सन क। ककरो अपमान वा अभिघात कयने ओकरा मोन में नहिं राखथि तुरते विसरि जाथि। मैत्री, करूणा, दया आ प्रेम क संग हिनक अपना पर अनुशासन छलैन जे बदला नहिं ली, केओ अभिघात करे तऽ ओकर प्रतिकार नहिं करी वरना ओकर उपकार करियै। अपमान, अभिघात चुपचाप सहिली।

द्वेष आ क्रोध तऽ पूर्णतः वश में छलैन्ह। ताहि पर सँ विकसित करै छलाह अत्यन्त विनम्र व्यवहार। कौखन कटु नै होइ छलाह। आ एकरे अंग छलैन हिनक नवीन साधना, 'सभ के पहिनहिं प्रणति'।

ऋृषिकेश में ताहि समय में गदहो, कुकुर के प्रणाम करक हेतु हिनकर ख्याति छलैन। सभ तरहक, सभ स्वभावक लोक के प्रणाम करवो में हिनका हिचकिचाहट नहिं होइ छलैन्ह।

ताहि समय क एक उल्लेखनीय घटना अछि। लक्ष्मण झूला में एक स्वामी राजेश्वरानन्द जी रहै छलाह ओ छलाह देवी भक्त आ दस बारह साल सँ नवरात्रि में बराबरि सविधि भगवती क आराधना करैत रहथि।

एक बेर नवरात्रि समीपो आवि गेला पर पूजा क कोनो व्यवस्था नै भेला सँ चिन्तित रहथि। पूजा क एक दिन पूर्व हुनका कुटी पर किछु पंजाबी युवती अनेक तश्तरी में साड़ी, आन कपड़ा वा रुपया उपहार लेने पहुंचि कऽ कहलखिन्ह कि स्वामी शिवानन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपहार पठौलन्हि अछि। पूछल गेला पर कि तश्तरी ककर छिए कहलखिन्ह 'क्षेत्रक' आ तश्तरी लऽ कऽ चल जाइ गेली। राजेश्वरानन्द जी तुरत्त स्वामी शिवानन्द क कुटी पहुंचि खटखटौलन्हि आ खुजला पर पुछलखिन्ह ओ पंजाबी युवती सभ के छलीह। 'कोन पंजाबी युवती'? वैह जिनका मार्फत उपहार पठौने छलौं 'हम तऽ ककरो ने पठौलौं' स्वामी जी कहलखिन्ह। राजेश्वरानन्द जी दौड़ल क्षेत्र गेला। कोनो पता नहीं। राजेश्वरानन्द जी के आचर्श्य भेलनि जे भगवती आखिर दर्शनों देलनि तऽ गदहा कुकुर के प्रणाम केनिहार स्वामी क प्रेरणा सँ, कोनो तन्त्र, मन्त्र सँ नहिं।

यद्यपि आन्तरिक परिवर्त्तन पर, जेना शम, दम आदि, स्वामी जी बेशी जोर दैत रहला अछि वाह्य संयम के पूरा महत्व दैत रहलखिन्ह अछि। अपनो साधना काल में जिह्वा के वश में आनक हेतु अनेक संयम करथि। एक आध मास नून, चीनी, मसाला छोड़थि तऽ दोसर मास अम्मत, मिरचाइ वा तरकारी।

सभ संयम क संग साधु सेवा चलिते रहनि। अवसर क ताक में रहथि जे कखन कोन साधु के कोन तरहें उपकार करवै।

स्वर्गाश्रम में रहवाक प्रारम्भ में एक कठोर नियम रहैन चारि बजे भोरे उठि भरि छाती गंगा में पैसि, जप करब। सूर्योदय भेला पर सूर्य के अर्घ्य दैत बाहर होथि। पहाड़ क कारण स्वर्गाश्रम लग क गंगा में सूर्य किछु देरी सँ देखाइदैत छथिन्ह। जाड़ क दिन में तीन चारि घंटा होन्हि। ऋषिकेश क गंगा जी में थोड़वो काल ठाढ़ रहब केहैन दृढ़ता क काज छिऐ से एक डुबकी देनहिं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बूझि सकै छिऐ जाड़ क दिन में भोर में बहरेबा क काल दस पांच गोटे कीर्त्तन करेत अगियासी तैयार रखने रहैन।

हिनक दोसर नियम रहैन निस्वार्थ सेवा। निस्वार्थ सेवा पर हिनक बराबरि बहुत जोर रहलैन्ह अछि।

लक्ष्मण भूला क सत्य सेवाश्रम में बद्री केदार क यात्री लोकनिक सेवा करथि, दवा दारू करथि। हरेक यात्री के चलवा क काल यात्रा क उपयोगी एक सन्देश क पोटरी देल करथिन्ह ताहि में रहै टींक्चर, कुनैन क गोली आदि। एक बेर एक यात्री के पोटरी दकऽ विदा कयलन्हि। पाछां मोन पड़लेन्ह जे जौं ओकरा सुधा सिंधु दितिऐ तऽ ओकर वेशी उपकार होइतै दोसरा दिन भोरे से देवक हेतु विदा भेला आ पांच मील तेजी सँ चलि कऽ ओ दवाइ देलखिन्ह। हिनक सेवा रहैन जे अनका उपकार करक हेतु अपन कोनो ख्याल नहिं बूझी। तखनहिं लोक सर्वात्म भाव क योग्य होइत अछि

किछु गोटे सोचै छथि जे सन्यास लेने सभ काम काज छोड़ि देवाक चाही अथवा जे स्वाभाविक गुण आ प्रवृत्ति रहे तकरा रोकि देवाक चाही। किन्तु सभ किछु समाज क ईश्वर क सेवा में लगा देला सँ जे विकास अवश्यम्भावी छै तै सँ अपना के वंचित रखै छथि। स्वामी शिवानन्द क हृदय प्रेम सँ, दया सँ उमड़ै छलैन। आस पास क लोकक वा यात्रीक व्यथा देखि अपन जे दवा दारू करक सामर्थ्य छलैन तकरा जन सेवा में उपयोग करक हेतु सत्य सेवाश्रम क स्थापना कयलन्हि। आसन, प्राणायाम में आदि सँ अपना के स्वस्थ्य राखक एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवश्यक आदश क प्रचार कयलन्हि। भक्त होथि वा ज्ञानी स्वस्थ्य रहब सभ के आवश्यक छैन।

से छिऐन स्वामी शिवानन्द क योग समन्वय जकरा द्वारा मानव क विकासक क्षेत्र में एक नवीन धारा प्रवाहित कयलन्हि अछि थोड़ेक आसन प्राणायाम करू स्वस्थ्य रहक हेतु। थोड़ेक जप कीर्त्तन करू भक्ति वढ़वक हेतु, थोड़ेक ध्यान स्वाध्याय करू ज्ञानयोग क हेतु आ थोड़ बहुत निस्वार्थ सेवा करू चित्त शुद्धि क हेतु वा सर्वात्म भाव क हेतु। एकर सभ सँ पंघ आदर्श अपनहिं रहला अछि।

निस्वार्थ दवा दारू करक संग हिन कर ताहि दिन नियम छलैन अपना रोगी क तड़वा रगड़क। संग संग सभ में प्रभु मूरति देखक अभ्यास के रास्ता देखावक छलैन्ह।

जाति, पाति, रंग, रूप, लोंग अवस्था क भेद तऽ विसरले जकां छलैन। तकरे निर्देशक एक छोट घटना क उल्लेख करै छी जे तखन संग रहनियार स्वामी स्वरूपानन्द कहलैन्ह। एक बेर स्वर्गाश्रम क धर्मशाला में एक बूढ़ी आ हुनक बेटा एक अधवैसू बिधवा दुखित रहथि तऽ स्वामीजी दबा दारू केलाक बाद बूढ़ी क तऽ तरवा रगड़लनि किन्तु बेटी लाजे पैर नहिं बढ़ौलकन्हि। छोड़ि कऽ कुटी अयला पर भरि राति ऐ गुन धुन में कि भेद भाव मन में कियेक ऊठल भरि राति सुतला नहिं। भोरे सन्यासी शिष्य स्वामी स्वरूपा नन्द, स्वामी आत्मानन्द आदि क संग हुनकर तड़वा रगड़लैन तखन निश्चिन्त भेला।

अनेकों घटना सिद्ध करत जे सेवा करवा में हिनका लेश मात्र अभिमान वा अपना सुविधा क ख्याल नहि रहल करैन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गंगासागर क मेला गेल रहथि सिघाइ के महारानी क संग आ जहाज सँ उतरवा क काल भरि जांघ पानि दऽ सभ के :जेवाक होइ। अपना कंधा पर कऽ महारानी के पार केल किन्ह।

एक वेर ओही महारानी क ओइ ठाम एक सन्यासिनी वेहोश भऽ गेल रहथिन तऽ अपना कंधा पर उठा कऽ हुनका अस्पताल लऽ गेला आ दवा दारू करौलन्हि।

एक वेर एक अंगरेज साधु लायक नामक ऋृषि केश में बड़ रुग्ण रहथि तऽ हुनका अपना माथ पर उठा कऽ अस्पताल लऽ गेला।

अपन शिष्य ज्ञानानन्द जी बहुत दुखित रहथिन तऽ हुनका पीठ पर उठा कऽ ऋृषिकेश लऽ गेला आ ओइ गाँम सँ लखनउ पठौलन्हि।

सेवा करवा में घृणा वा अपना खतरा क विचार हिनका वाधा नहिं देन्ह।

एक वेर कैलाश आश्रम क एक साधु के चेचक भेलन्हि तऽ दिन राति हुनका लग रहि कऽ सेवा सुश्रूषा केलखिन्ह। एक वेर अनन्तानन्द नामक एक साधु के हैजा भेलै वा दोसरा वेर वोर राघवाचार्य के शिष्य के हैजा भेलो पर बराबरि लग रहि कऽ दवा दारू केलखिन्ह जखन कि आन लगो ने जाइत रहै।

एकटा केवल हिनकर सेवा क आदर्श सिखला सँ आदमी देवतो बनि सकैये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीर्थ यात्रा

ओना तऽ मलाया छोड़ि कऽ अयला पर दू साल तीर्थाटन करैत छलाह। ऋषिकेश में जमिओ गेला पर प्रारम्भ में तीर्थाटन आ तकरा बाद प्रचारार्थ परिभ्रमण छुटलनि नहिं। १६२६ ई० में किछु और स्वामी क संग बद्री केदार गेलाह। लौटती में देव प्रयाग सँ देहरी होइत मसूरी गेला आ तखन ऋषिकेश घुमला।

१६३० ई० में महारानी सुरत कुमारी क संग गंगा सागर गेला आ कपिल मुनि क दर्शन कयलन्हि। १६३१ ई० में किछु और स्वामी क संग कैलास यात्रा कयलन्हि। अपना कैलाश यात्रा पर हिनकर एकटा ग्रन्थो छैन। दू मास लगलैन। ४६० मील चलक भेलैन। आवतऽ बहुत कम पैदल चलक होइछै। ओइ ठाम सँ घूरि मथुरा, वृन्दावन गया होइत जगन्नाथपुरी गेला।

दक्षिण में रामेश्वर, तिरुवनमलै में अरुणाचलेश्वर आदि में शंकर क आराधना कयलन्हि। रमण महर्षि क आश्रम गेला। ओही दिन महर्षिक जन्म दिन छलन्हि। स्वामीजी क कीर्त्तन सँ ओइठाम क जुटल समाज चकित भेल, ततेक आकर्षक उन्मादक तरंग छलै। अरविन्द क आश्रम गेला।

स्वामीजी क यात्रा में विशेषता रहै छलैन हिनक सेवा भावना। जतहि मण्डली रुकल कि जे अस्वस्थ्य रहल तकरे सेवा में लागि जाइत छला। सांझ, भिनसर सब के कीर्त्तन करावऽ लगलौं। ओहुना ककरा की असुविधा छै तकर देख रेख जेना सर्वत्र हिनके जवाव देही रहै छलैन। आदर्श छलैन हिनक चरित्र जे यात्रा में केना रहक चाही।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नित्य कर्म

निरासक्त भय सकल कार्य कय
पावथि ब्रह्म महान।
कर्महि लय अराधि परम के
पावथि मानव ज्ञान।
करथि आचरण जहिना गुरुजन
अनकर हो व्यवहार।
हुनक प्रमाणादर्श मानि नित
अनुसर सभ संसार।
शेष न किछु कर्त्तव्य धनुर्धर
जगमें हमरा लेल।
अछि पावक नहिं वस्तु तदपि हम
रही कर्म रत भेल।
नहिं हमहीं यदि करब कर्म नित
आवि कर्म संसार।
हमरे पर दय दोष लोक सभ
नहिं करता संचार।
रहथि कर्मरत जहिना अर्जुन
संग सहित अज्ञान।
तहिना रहथि लोक हित लागल
संग रहित सज्ञान ॥

गी० अ० ३ २१-२५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुत गोटे कहता जे सन्यासी के नित्य कर्म की ? सन्यासी काम्य कर्म क त्याग करै छथि, शारीरिक परिचर्यादि परोपकारादि नित्य कर्म क नहिं। जाहि समय क उल्लेखभऽ रहल अछि १६२६ वा ३० ई० क लगभग स्वामीजी पूर्ण विकसित भऽचुकल छलाह। अपना पूर्णत्व क हेतु किछु करव शेष नहिं छलेन। हुनकर नित्य कर्म अनका आदर्श देखेवाक हेतु छलैन्ह।

प्रातः काल चारि बजे ऊठि, गंगा स्नान कय, थोड़ेक आसन, प्राणायाम कय, ध्यान करक हेतु वैसै छलाह। आसन पर वैसिते थोड़ेक श्लोक ओ कीर्त्तन ध्वनि करै छलाह। तीन चारि घण्टा ध्यान क बाद रोगी भगवान क निरीक्षणार्थ वहराइत छलाह आ जिनका जै सेवा क दरकार रहै छलैन्ह से करै छलखिन्ह।

तखन चलै छला चुप चाप क्षेत्र सँ भिक्षा आनक हेतु। अपन भिक्षा आनि कऽ रखै छला कुटी में आजे दूध दही वा फाजिल तरकारी व्यवस्था भऽसकै छलैन्ह से रोगी में वॉटक हेतु चलै छला। भोजनोपरान्त रहै छलैन्ह स्वाध्याय वा लीखा-पढ़ी। सांझ में एकाध घंटा भेट-घाट केनिहार क हेतु रहै छलैन्ह। दीआ वाती भेला क बाद चलै छलैन्ह सत्संग।

एक संग बहुत काज करक हिनका क्षमता छैन। रोगी क दवा आ यात्री क प्रश्नोत्तर, चिट्ठी पढ़ब आ ककरो व्यवस्था सम्बन्धी आदेश वा उपदेश संगहि चलै छलेन। कल्याण, परलोकी, सँकीर्त्तन, लोकोपकारी शान्ति, संदेश, मेहर गजेट मोइ मैगजिन, छात्र आदि पत्रिका में हिनकर बराबरि लेख छपै छलैन्ह।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतेक करितो किताव लिखें छलाह। अही तरहक कार्य-क्रम किछु फेर बदल सँ एखनों तक चलैं छैन। ऐ कार्य क्रम में एक आदर्श क संग संग जनता जनार्दन क सर्वोच्च सेवा सन्निहित छै।

---

११ ईश्बर के कोनो आकार नै छैन किन्तु सभ आकार में वैह छथि।

१२ कारण फल में आ फल कारण में लिपटायल रहै छै।

१३ ईश्वरेक शक्ति सृष्टि के धारण केने अछि।

१४ प्राण या शक्ति सँ वसुधा में गति छै।

१५ सभ में भगवान जीवन आ चेतना भेल रहैं छथिन्ह।

१६ संसार में प्रिय सँ प्रिय वस्तु अपन आत्मा अछि। समीपो सभ सँ वैह अछि।

१७ जही रूप में भक्त प्रेम करैं छेन, भगवान ओही रूपें दर्शन दैत छथिन्ह।

१८ भगवान के अहाँ सोचिकऽ नै बूझि सकै छिऐन किन्तु छथि धर्ार ओ सभसँ वेशी जगजिआर।

१९ भगवानक परिभाषा करक अर्थ थीक हुनका नै बूझब

२० ओ वस्तु जे एखन तक वैज्ञानिक नै वूझि सकला अछि भगवाने छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिष्य वर्ग

छथि यथार्थ तत्वक उद्गाता
मानव धन्य महान।
हुनक बोल अनमोल सुनय जे
करय अपन कल्याण।
गंगा, गीता, हरि यथा
छथि पुनीत भगवान।
परम तत्व में लीन जे
करथि बिश्व कल्याण।

स्वामी शिवानन्द क शिष्य वर्ग एखन दिग दिगन्त में भरल छथि संसारक गणना जोग कोन देश एहैन अछि जतय हिनक किछु शिष्य, किछु भक्त नहिं होथि। सुदूर अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका आदि क विशेषतः क्रिश्चन या अन्य मताबलम्बी बराबरि दस बीस हिनका आश्रम में सीखक हेतु बैसले रहै छथि। नैतिक उत्थानक, जन कल्याण, धर्म परित्राण मानवताक भविष्यक आशा ई शिष्य वर्ग केना जुटला से संक्षेपहि कहब।

प्रारम्भ में शिष्य स्वीकार करबा में हिनका बहुत तारतम्य होइत रहैन्ह। उपलब्ध शिष्य वर्ग में सभ सँ पुरान स्वामी परमानन्द तकर साक्षी छथि। तेँ प्रारम्भक किछु शिष्य वर्ग बहुत ठोस, दृढ़ आ विरक्त रहला। स्वामी परमानन्दक नाम ताहि में अग्रगण्य रहतैन। दिव्य जीवन संघ वा स्वामी जी क संदेश प्रचार करबा में हिनक बहुत श्रेय छैन। प्रारम्भ में कतेक शिष्य अपनो सँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवस्था में बेशी रहल करथिन्ह जेना स्वामी ज्ञानानन्द, स्वामी स्वरूपानन्द आदि।

पश्चात संन्यास दीक्षा देवा में वा शिष्य वर्ग के अपना आश्रम में रखवा में बहुत उदार भऽ गेला। जकर फलस्वरूप हजारों हजार आदमी हिनका सँ दीक्षित सन्यासी छथि एवं शिष्य वर्ग क गणना करक हेतु तऽ सरकारक गणित विभाग क सहायता लेवक हैत।

स्वामी जी महाराज क अपन कथ्य छैन जे प्रचार करक वा आश्रम खोलक हिंनक अपन विचार नहिं रहैन। हिनका शब्द सँ ग्रन्थ सँ, दर्शन सँ प्रभावित भेला पर लोक अपनहिं हिनका लग जूटऽ लगलैन। हिनका सम्पर्क सँ यथार्थ साधक के बहुत लाभ होमऽ लगलै। संगहिं अहि प्रकारक निपुण, योग्य लोक आवऽ लगलैन्ह जे आश्रम के वा प्रचार कार्य के बढ़ा सकथि ताही में विशेषतः उल्लेखनीय छथि स्वामी चिदानन्द आ स्वामी वेंकटेशानन्द। स्वामी चिदानन्द जी सम्प्रति अमेरिका क लोक क आमन्त्रण पर ओतहि योग वेदान्त क प्रचार कऽ रहला अछि आ स्वामी वेंकटेशानन्द अपना गुरुदेव क दहिना हाथ भेल आश्रम क कार्य। हिनका लोकनिक क्रिया-कलाप क उल्लेख आगू वेशी भेटत।

—):०:(—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रचार कर्म

नहिं घायल जे होथि वीर नर
लगितहु नयनक वाण।
कोप कृशानु दग्ध नहिं हृत्तल
जिनकर खींचनि प्राण।
लोभ रज्जु चारू दिश जिनका
चलनि न लय घिसीयाय।
से छथि धीर वीर मुनि विश्वक
त्राता, शरण, सहाय।
जे जन हमरा भक्त वृन्द में
करता धर्म प्रचार।
ओ प्रियतम रहता नित दिन बनि
श्रेष्ठ शुभद संसार॥

आत्मानन्द क माधुर्य पावि गेला पर ओकरा जतेक विशद क्षेत्र हो ताहि में बांटक हेतु स्वामी शिवानन्द जतऽ कतौ अवसर होनि कीर्त्तन कैल करथि, प्रवचन देल करथि। सर्वप्रथम प्रवचन देलन्हि सीतापुर में पं० चन्दनारायण हरखौली क निमन्त्रण पर। एहेन अवसर पर संग में स्वामी आत्मानन्द एवं स्वामी स्वरूपानन्द रहल करथिन। स्वामी आत्मानन्द कीर्त्तन गावक हेतु एवं स्वामी स्वरूपानन्द हिनका भाषण के हिन्दी में अनुवाद करक हेतु। हिनक दृष्टि कोण छलैन :—नारायण सन मन्त्र जखन अछि, सहज लब्ध रस धार। कियैक तखन जन घोर दुख सहि,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रहथि पड़ल संसार। लोक ग्रहण करक हेतु तैयार रहौ कि नहिं ई अपन अमृत बर्षिणी धुनि गवैत जाइ छलाह।

एक सप्ताह भरि सीतापुर में ४ बजे भोरे कीर्त्तन ध्यान. सहर भरि प्रभात फेरी, नगर कीर्त्तन, आसन प्रचार लिखित जप आ सायंकाल कीर्त्तन, भजन क संग प्रवचन सँ बातावरण के हरिनाम सं भरि देलनि। जतहि हिनक कार्य क्रम रहै छलैन लोक क घूम लागि जाइ छल।

सीतापुर सँ लखनउ गेला आ तकरा बाद मुंगेर क कीर्त्तन सभा में। मुंगेर एवं भागलपुर में अपना 'लोरी कीर्त्तन' सँ वातावरण के जगमगा देलनि। कीर्त्तन पार्टी सजि धजि कऽ मोटर लौरी में घुमैत कीर्त्तन करै छल। ताही समय में आन्ध्र प्रदेशक शान्ति आश्रम क स्वामीजी ओंकारजी बजौलखिन्ह आ कलकत्ता होइत शान्ति आश्रम गेला।

शान्ति आश्रम क पास वेंकट ग्राम चिन्तालू आदि स्थान में अपना भजन कीर्त्तन सँ आध्यात्मिक आन्दोलन कैलन्हि। ऐ इलाका क लोक के बहुत दिन बितलो पर हिनका ऊँकारक ध्वनि सुनाइ दे। लोक सभ बहुत दिन वादो धरि खेतो जोतैत वा वाजारो जाइत रामधुन कीर्त्तन करैत चले। एकटा सांढ़ मरणा-सन्न भेल पड़ल रहे। ओकरा स्वास्थ्यक हेतु स्वामी जी कीर्त्तन कयलन्हि आ दुइये तीन दिन में सांढ़ स्वस्थ्य भऽ गेल। से देखलैन्ह स्वामी नारायणानन्द वा आन आन लोक।

स्वामी जी क विशेषता छैन हिनकर उपस्थिति जाहि सँ लोक बहुत बेशी प्रभावित होइत अछि। भाषा हिनकर बुझौ वा नहिं हिनका उपस्थिति सँ धार्मिक चेतना जागि उठै छै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ताहि कारणे लोक बेशी आवऽ लगलैन्ह। सभ प्रकारक सभा सम्मेलन क हेतु लोक सभापतित्वक हेतु हिनका निमन्त्रण देबऽ लगलैन्ह। प्रारम्भ में विशेषतः पंजाब आ काश्मीर गेल करथि। लोक क भीड़ लागि गेल करैन्ह। लोक बहुत प्रभावित होइ छल। स्वामी स्वरुपानन्द संग रहै छलखिन्ह। हिनक काज छलैन्ह स्वामी जी क प्रवचन के हिन्दी में अनुवाद करब।

दू एक सभा सम्मेलन क बाद लाहौर में अनेको भक्त भेलखिन्ह। पाछू एतहि सँ पहिले पहिल दिव्य जीवन पत्रिका अङ्गरेजी में छपऽ लागल। पंजाब प्रदेशक प्रथम कीर्त्तन समारोह में १९३५ में लोक साधनात्मक नियम रखलक।

लाहौर क अही कीर्त्तन सभा में अनेकों अलौकिक घटना भेल। स्वामी जी महाराज ठाढ़े ठाढ़ शाम्भवी मुद्रा सहित समाधिस्थ भऽ गेला। लोक में ततेक भाव वृद्धि भेलैक जे लुधिआना क सावित्री देवी क दिव्य नृत्य करिते करिते देह चेतना विलुप्त भऽ गेलैन।

जाहि कोनो सभा संगठन में जाथि स्वामी जी क संग किताब क वा किछु पर्चा क एक झोली रहल करैन। अपना आवश्यकताक सभ वस्तु रहैन जे ककरो खोज नहिंओ केला पर असुविधा नहि हो। कोनो काज प्रारम्भ केला पर विघ्न वाधा वा असुविधा हिनका रोकि नहि सकैये। ककरो संग दुर्व्यव्यवहार हिनका बुझले ने छैन आ शिष्य वा भक्त वर्ग क संग वड़ा आदर सँ व्यवहार होइ छैन।

हिनका प्रचारक ताहू समय में काफी असर पड़ल रहै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२४ अगस्त १९३३ ई० क स्वर्गाश्रम साधु संग क स्थापना कयलन्हि। साधु क केओ सुननिहार नहिं, केओ देखनिहार नहिं, केओ शिक्षा देनिहार नहिं, योग सिखौनिहार नहिं। साधु सभ के संगठित करक हेतु, निस्वार्थ सेवा वा प्रचार कार्य क उपयोगी बनावक हेतु स्वामी जी साधु संघ क स्थापना कयलन्हि। साधु संघ क जरिया सँ यू० पी० क स्कूल कालेज में आसन वा अध्यात्म प्रचार होमऽ लागल। कीर्त्तन क आयोजन जहाँ तहाँ होइत रहे। इटावा में एक कीर्त्तन सभा भेल। १९३४ ई० में लाहौर सनातन धर्म सभा क एवं मेरट में अखिल भारत कीर्त्तन सभा क सभापतित्व कयलन्हि। हिनका सँ पत्राचार सँ अनेको व्यक्ति के आध्यात्मिक प्रगति में सहायता होमऽ लगलै। ऋषिकेश क आश्रम में साधक क संख्या बढ़ऽ लागल।

साधु संघ स्थापित करक किछु दिनक बाद, ११ जनवरी १९३४ ई० कऽ स्वर्गाश्रम छोड़ि स्वामी जी के वर्त्तमान आश्रम में आवक भेलन। कतवो मना केला पर हिनका लग साधक वर्ग जूटऽ लगलैन्ह। ताहि सँ स्वर्गाश्रम व्यवस्थापक लोकनि के असुविधा होइ छलैन्ह। स्वामी जी महाराज प्रचार कार्य में बाहर गेल रहथि तखन स्वामी परमानन्द जी मोटा चोटा लेने गंगा क अहि तट पर पहुँचि गेला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिवानन्दाश्रम

गंगा क अहि तट पर पहुँचला क बाद स्वामीजी क जीवन सार्वजनिक जकां भऽ गेलैन। जतहि जमि गेला ततहि क्रम सँ मकान, मन्दिर, भजनगृह, अस्पताल आदि वनव प्रारम्भ भऽ गेलैन्ह। दिनानुदिन एनिहार, रहनिहार लोक क संख्या में वृद्धि होमऽ लगलैन। क्रमशः आयुर्वेदिक दवाखाना, विश्वनाथ मन्दिर के वन्द गुफा, योग साधन कुटी, हीरक जयन्ती हौल, एवं अन्यान्य भवन केर श्रृष्टि भेल। एवं अहिपार आवक किछु दिन क बाद प्रादुर्भाव भेल एक संघक जकर व्यापकता विश्व एवं समाजक हेतु उपयोगिता क प्रसार क प्रारम्भ में कलपनो तक नहिं कैल जाइत। ओ थिक दिव्य जीवन संघ जकर स्थापना १३ जनवरी १६३६ ई० कऽ भेल।

दिव्य जीवन संघ क लक्ष्य आछि :—

१ अध्यात्म ज्ञान क प्रचार एवं तदर्थ :धार्मिक ग्रन्थक वा पत्र, पत्रिका छपौनाइ। धार्मिक प्रवचन तथा हरिनाम संकीर्तन सभा क व्यवस्था। नैतिक वा आध्यात्मिक साधना क प्रदर्शनीक व्यवस्था। हठ योग क शिक्षा वा तकरा प्रचारक केन्द्र।

२ धार्मिक एवं शास्त्रीय विषयक अन्वेषण क हेतु व्यवस्था।

३ दलित वा पीड़ित वर्ग वा व्यक्ति क सहायता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४ दीन जनक सेबा क हेतु चिकित्सा क व्यवस्था।

दिव्य जीवन संघ क स्थापना सँ एतेक बुझना जाइत अछि कि स्वामीजी के मानव समाज में उत्थान क एक पूर्वाभास भेटल छलैन्ह।

दिव्य जीवन संघ क दिनानुदिन बढ़ती होइत गेलै। अहि संघ क माध्यम सँ स्वामीजी अध्यात्म पथिक क सम्पर्क में देश में आ विदेश में अनैत रहला। सम्प्रति देश विदेश में चारि से पांच से शाखा संघ क सक्रिय रूप सँ काज कऽ रहल अछि।

दिव्य जीवन संघ के प्रारम्भे सँ सफलता भेटैत रहलै। ओही साल अप्रील में संघ क प्रादेशिक सभा क व्यवस्था लाहौर में भेल जाहि में स्वामीजी अपनो भाग लेलनि। अनेकों सिद्धान्त सर्व सम्मति सं स्वीकृत भेल जकर सारांश छलै जे लोक क आध्यात्मिक जींवन में यथार्थ प्रगति हो जेना आध्यात्मिक दैनन्दिनि राखव वा बीस आध्यात्मिक उपदेश के मानव आदि।

एतेक प्रारम्भिहि सँ प्रत्यक्ष छल कि स्वामीजी सभ के आध्यात्मक दिश बढ़ेवाक प्रयत्न में छथि। संघके दोसर कोनो लक्ष्य नहिं छै। स्वामीजी वा प्रचार कार्य में हुनक सहायक शिष्य गण केवल मात्र जन समाज क अध्यात्म के जागृत करक हेतु खटैत रहला अछि। हिनका सभ में सर्वाङ्गीन सर्वोच्च सांसारिकता क त्याग रहलनि अछि। ईश्वर क असीम करुणा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वामीजी क द्वारा समाज में अध्यात्म प्रचार क रूप सँ प्रवाहित भेल अछि से कौखन विसरक नहिं चाही।

शीघ्रहि जहाँ तहाँ संघ क शाखा खुजऽ लागल। साखा सभ में साधना शिक्षा चलऽ लागल पर्व एवं स्वामीजी क जन्मोत्सव क अवसर पर विशेष समारोह क संग धार्मिक प्रवचन और प्रचार चलऽ लागल।

लाहौर शाखा पहिले पहिल 'दिव्य जीवन' पत्रिका क प्रकाश कयलक। आनो शाखा सभ सँ शिवानन्द साहित्य क अनुवाद एवं प्रकाश होमऽ लागल।

गंगा तट पर अपना कुटी में बैसल बैसल असंख्य व्यक्ति के प्रभावित कयलन्हि अछि। शत सहस्त्र व्यक्ति क समस्या ओतहि सँ हल करैत रहला अछि। से कि कम आश्चर्यक बात छी? दिव्य जीवन संघ क शाखा वा स्वामीजी क शिष्य आ भक्त ओहू सभ सुदूर देश में छथि जहां शरीरे सँ कहिओ नहिं गेल छथि। अपना पत्र सँ, ग्रन्थ सँ से उत्साह लोक में भरि दैत छथिन्ह कि कोनो धर्मक लोक कतौ रहनिहार आज्ञाकारी सिपाही भेल दिव्य जीवन क हेतु खटऽ लगैये।

दिव्य जीवन क विकास शिवानन्द शिष्य मण्डली क विकास क सँग सँग भेल। प्रारम्भ में दू चारि गोटे :स्वामीजी क सँग रहै छलाह। आब दू तीन सौ साधक सन्यासी आश्रम में बराबरि रहै छथि। स्वामीजी क आश्रम खोलवाक विचार नहिं छलन्ह किन्तु क्रमशः हुनका लग में एक विशद आश्रम बनि गेलैन्ह एक अतुलनीय आदर्श आश्रम बनि गेलैन्ह।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रारम्भ में गंगा क अहि तट पर अयला पर चारि गोटे सँ राम आश्रम में रहि गेल रहथि। सभ के भिक्षा लेवक हेतु रौद पानि में दू मील दूर काली कमली बलाक क्षेत्र जेवाक होन्हि। पाछाँ एक टूटल कुटी वा एक गोशाला के साफ सुथरा कय ओही में सभ गोटे जमि गेलाह। टेहरी महाराज सँ जमीन लेलन्हि। भक्तवृन्द क चन्दा सँ एक कुटी अहि ठाम तऽ एक भजन गृह बनैत बनैत अनेकों अट्टालिका क श्रृजन भेल। आश्रम क हेतु केओ मन्दिर वनेवाक चन्दा देलन्हि आ केओ विश्वनाथ वागक हेतु। सभ आधुनिक सामग्री सम्पन्न एक अस्पताल बनि गेल, एक आयुर्वेदिक दवाखाना, एक विषद छापाखाना और कलागृह।

अहि सभ विकास क मुख्य लक्ष्य रहल अछि आगन्तुक साधक क विकास। ताही सम्बन्ध क एक घटना उल्लेख करै छी। ९ जनवरी १९५६ ई० कऽ शिवानन्द रिगेलिया क उद्घाटन समय में हमहूँ ओतहि छलौं आ स्वामीजी क संग विभिन्न कला क वस्तु जे समय समय पर लोक उपहार देने रहैन्ह, हुनक तपस्या क समय क वस्तु जात वा हुनके लिखल सैकड़ो ग्रन्थ क लीपिक निरीक्षण करै छलौं तैखन एक ग्रन्थाकार जील्द मढ़ाओल पत्र क संकलन भेटल। स्वामीजी परमानन्द जे रिगेलिया क सँकलन कर्त्ता छथि बजला जे स्वामीजी महाराज जे हुनका पत्र देने रहथिन्ह, ओ तकरे संकलन छल। स्वामीजी हमरा सं अहि संकलन क तात्पर्य पुछलन्हि आ हम किछु बात वनेवा क चेष्टे करै छलौं तावत परमानन्द जी बजला जे अहि सँ सिद्ध अछि जे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक एक साधक क उत्थानक हेतु स्वामीजी कतेक यत्न करै छथि। अहि तात्पर्य के स्वामीजी स्वीकार कयलन्हि।

स्वामीजी क पास जेहने व्यक्ति पहुँचि जाइ छैन्ह ओकरे वढ़ियां वनायव प्रारम्भ करै छथि आ फल स्वरूप अनेकों उच्छृंखल युवक श्रेष्ठ उद्दीप्त सन्यासी भेल हुनका महत्ता क गुण गवै छथि।

साधक लोकनि के निष्काम कर्म योग क क्षेत्र देवाक हेतु आश्रम क विकास भेल अछि। निष्काम कर्म योग क अभ्यास नहिं केने अध्यात्म मार्ग में प्रवेश कठिन। वैदिको काल में कर्म-उपासना आ ज्ञान क परम्परा में आधार छल कर्म। गीता क मूल भीत्ति कर्मण्येव अधिकारस्ते माफलेषु कदाचन सबहक हेतु एक सार्वभौम नियम छी। जखन फलक आकांक्षा विनु कर्म करवा क अभ्यास में लोक अग्रसर होइत अछि तैखन बुद्धि स्थिर होइ छै। विभिन्न प्रकार क साधक के अनेक प्रकार क साधन आश्रम में देल गेल छैन।

प्रारम्भ में शिष्य लोकनि के साधु संतक वा रोगी क सेवा करक होनि। अपने स्वामीजी तपस्या काल में बूढ़ वा रोगी साधुक हेतु गंगाजल भरि कऽ आनि देथिन वा कपड़ा खींच देथिन और तहिना प्रथम शिष्य स्वामी परमानन्द के सेहो करक होनि। स्वामीजी क साधना में सेवा तथा उदारता क सर्वोच्च स्थान रहलैन अछि।

शिष्य लोकनिक शिक्षा में सभ सँ पैघ असर स्वामीजी क अपने चरित्र क होइ छैन्हि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वामीजी क अन्तस्थ प्रेम, नम्रता सहानुभूति आ सभ होइतो तीव्र वैराग्य क छाप हुनका हरेक आचरण के दीप्त करैत रहलैन्ह अछि। फल स्वरूप हुनका सम्पर्क में आयल लोक में आन्तरिक परिवर्तन होमऽ लगैछैन्ह। कठिन सँ कठिन परिस्थिति में हुनक विनोद सजग रहै छैन्ह। सर्वोपरि रहलन्हि अछि सर्वदा करुणा क नियम।

सर्वोपरि रहलन्हि अछि हिनका पर परमात्मा क कृपा आ हिनकर सम्पूर्ण आत्म समर्पण। जे किछु कयलन्हि, करैछथि से ईश्वरार्पण बूझि। फल स्वरूप अपना कर्म फल क लाग तऽ नहिंए रहलैन्ह वरंच अनका ईश्वर क महिमा हिनके द्वारा प्रस्फुट होइत बुझना गेलै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपसंहार

शंकर बूझि शैव जिनकर सब
करथि अर्चना ध्यान।
जिनका ब्रह्म कहथि ज्ञानी मुनि
व्यापक कृपा निधान।
जिनका बुद्ध बौद्ध गण बूझथि
तार्किक स्वयं प्रमाण।
अल्ला मुस्लिम, यिसू क्रिश्चन
अर्हत जिन विद्वान।
जिनके कहथि जेहो वा मजदा
लोक वृंद सभ आन।
शिवानन्द ओ जन हित इच्छुक
स्वयं विष्णु भगवान।

लोक कल्याणक हेतु स्वामी जी अनेको विधिक प्रयोग कयलन्हि अछि। किछुक संक्षेपहि उल्लेख करबः—

(१) विश्व धर्म समन्वय सभा :—एकर सूत्रपात भेल २२ दिसम्बर १९४५ ई० कऽ। सक्रिय रूपें सर्व धर्म समन्वय क हेतु यत्न करब एकर लक्ष्य भेल। यथार्थतः सभ धर्म क मूलतत्व एक अछि आ भारतीय संस्कृति आदि काल सँ तकरे आदर्श मानैत रहल अछि। अन्तर केवल वाह्य अनावश्यक वस्तु में बुझना जाइत अछि। मूलतत्व मात्र के ग्रहण केने विरोध, झगड़ा हटत। सहयोग, भ्रातृत्व बढ़त। तैखन एकता चिरस्थायी भऽ सकैत अछि। आजुक युग में अहि वस्तु क अत्यन्त आवश्यकता अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१९५३ ई० में एक विराट समारोह ऋषिकेश में भेल छल। संसारक सकल मुख्य धर्मक नेता लोकनि एकत्रित भेल छलाह। सभ धर्मक मूलतत्व में एकता पर जोर देल गेल। एकरा उपलक्ष में छपल एक विशद ग्रन्थ में सभ धर्मक मुख्य तत्वक वर्णन भेटत।

(२) अखिल विश्व साधु संघ :—१६ फरवरी १९४७ ई० कऽ शिबरात्रिक दिन एकर स्थापना भेल। साधु संन्यासी भेलाक बाद अनेको व्यक्ति के उदर पूर्ति क अलावा और कोनो उपयोगी कार्य क्षेत्र नहिं रहै छैन। हिनका लोकनि के संगठित कय समाज सेवा में लगायव संघक उद्देश्य भेल। बराबरि एकर सभा होइत रहल अछि एवं साधु लोकनि के सक्रिय रूपें समाज सेवा में लगावक श्रेय अहि संस्था के वा स्वामी जी महाराज के छैन।

(३) शिवानन्द जयन्ती समारोह :—८ सितम्बर कऽ प्रति वर्ष संसार भरि क दिव्य जीवन शाखा में स्वामीजीक जन्मोत्सब मनाओल जाइत अछि। एकरा एक विशद धर्म यज्ञ कहि सकै छी। अहि अवसर पर विश्व कल्याणक हेतु हवन, प्रभात फेरी, दिव्य जीवनक लक्ष्य पर प्रकाश आदि कार्य-क्रम रहैत अछि।

(४) ग्रामोफोन रेकार्ड :—स्वामी जी महाराजक बोल उपदेश सुनक सुबिधा अधिक लोक के देवक हेतु कतेक भजन उपदेशक रेकर्ड भेल अछि। सांझ विहनसर सुनला सँ यथार्थं आनन्द भेटत। संगहि उपदेश भेटत, मन उन्नत रहत। बराबरि सत्संगक लाभ हैत।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

(५) टेप रेकर्ड :—सुखी सम्पन्न भक्त लोकनि स्वामी जी क भाषण क टेप रेकर्ड लेवऽ लगला। सत्य क विश्लेषण भेला सँ हिनक भाषण चिरस्थायी उपयोग क होइत अछि। विदेश सँ एनिहार भक्त लोकनि टेप रेकार्ड क माध्यम सँ हिनक उपदेश विभिन्न देश में प्रचारार्थ लऽ गेला। आधुनिक वैज्ञानिक विकाश क अध्यात्म प्रचार क हेतु उपयोग में आनक एक नवीन शैली क प्रादुर्भाव कयलन्हि अछि।

(६) कला गृह :—१९४९ ई० क शिवरात्रि क दिन कला गृह क स्थापना भेल। तहिआ सँ शत सहस्त्र संख्या में स्वामी जी क चित्रपट वितरित भेल अछि।

ओना तऽ वेधर्मी वा बेबूफ हमरा सभा के मूर्ति पूजक कहै छथि। एतेक नहिं बुझै छथिन्ह जे आदर्श सँ जीवन क उत्थान होइ छै। ताही आदर्श के ग्रहण करक हेतु हमरा लोकनि स्वरूपान्वित करै छी। स्वामी जी क चित्रपट एक आदर्श क प्रतीक अछि। अनेकों चित्रपट सँ उत्साहित भेलाह अछि, शान्त्वना भेटलन्हि अछि।

आश्रम क कार्यवाही क कला गृह छोट छोट चल चित्र तैयार केने अछि। अनेको सुदूर स्थित लोक के एकरा माध्यम सँ हठ योग क क्रिया, आसन आदि देख क लाभ भेलन्हि अछि, होइ छैन। आनन्द दायक संत चरित्र के कला गृह एक स्थायी सन रूप देलक अछि आ जन समाज तदर्थ ऋणी रहताह।

(७) शिवानन्द रिगेलिआ :—एकर श्रेय स्वामी परमानन्द जी के छन। स्वामी जी क जीवन सँ सन्बधित वस्तु जाव एतय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकत्रित अछि। सन्यास क प्रारम्भिक अवस्था क भिक्षा पात्र, कैलास यात्रा क योग दण्ड, विभिन्न देश विदेश क भक्त क देल प्रेमोपहार, अनेकों संस्था क देल उपाधि वा स्वागत-सम्मान एवं पेटी क पेटी छपल किताब क हस्तलिपी एतय सुरक्षित अहि। एतहि एक फाइल में राखल अछि ओ सैकड़ों पत्र जे समय समय पर स्वामी जी महाराज श्री परमानन्द स्वामी के लिखने रहथि। उद्घाटन क दिन स्वामी परमानन्द हमरा तकर अर्थ पुछलन्हि। हमहूँ ओतहि रही। चुप्प देखि कहलन्हि जे एक एक साधक क हेतु स्वामी जी कतेक यत्न कयलन्हि तकर से प्रतीक थीक। परम लक्ष्य पावक हेतु कतेक तपस्या आ त्याग चाही तकर एतय आभास भेटत।

(८) शिवानन्द चिकित्सा पद्धति :—सन्यास क पूर्व जीवन में स्वामी जी डाक्टर रहथि। तौखन जन सेवा क आदर्श सँ ओत-प्रोत रहथि। पहिने लिखि चुकलौं अछि जे लोक में आधुनिक चिकित्साक प्रचार करक हेतु अम्ब्रोसिया नामक पत्रिका चलौलन्हि। प्रत्युत डाक्टरी जन सेवा करक हेतु पढ़लन्हि। सन्यास लेला पर ओ सेवा क भावना जगले रहलन्हि। लक्ष्मण झूला में सत्य सेवाश्रम क स्थापना कयलन्हि बद्री केदार क यात्री क सेवा क हेतु। आश्रम में प्रारम्भ हि सँ चिकित्सा क व्यवस्था छलै।

सम्प्रति आश्रम में एक सुसज्जित अस्पताल अछि एलोपैथिक। एक सुसज्जित आँखिक अस्पताल अछि। एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय अछि। समय समय पर बाहर क सुप्रसिद्ध डाक्टर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोकनि निशुःल्क एक दू सप्ताह क आयोजन में चिकित्सा करै छथि। अहि ठाम क आयुर्वेदिक औषधि के शुद्धता क ख्याति छै। किछु समय तक नेचुरोपैथिक चिकित्सा चलै छल। चिकित्सा में स्वामी जी महाराज क समन्वय चलै छैन। कोनो चिकित्सा पद्धति सँ विरोध नहिं। आयुर्वेद, नेचुरोपैथी, एलोपैथी सबहक प्रमाण्य ग्रन्थ लिखने छथि। ओना तऽ छथि मुख्यतः भव रोगक चिकि-त्सक। दोसर पतंजलि।

(९) शिवानन्द संगीत :—संगीत सँ ईश्वर प्राप्ति पर स्वामी जी क एक ग्रन्थ छैन। भारतीय संस्कृति में संगीत क विशेष उप-योग आराधना के हेतु भेल अछि। आश्रम में बीणा विद्वान स्वामी विद्यानन्द जी प्राच्य पाश्चात्य छात्र छात्री के पट्टु तऽ करिते छथि संगहि प्रति दिन सायंकाल क सत्संग में उत्तर वा दक्षिण भारत क संगीतज्ञ एवं नाट्य कला विद लोकनि अपन निपुणता देखवै छथि। प्रत्युत संगीतक झड़ी लागल रहैत अछि। अनु-भवी अद्वैत वेदान्ती रहितो स्वामी जी भक्ति भावना जगावक हेतु संगीत क जीवन में एक उच्च स्थान दैत छथिन्ह।

(१०) साधना पद्धतिः—केवल मात्र अपना साधना सम-न्वय क हेतु स्वामी जी युग पुरुष कहा सकै छथि। सभ योग के, सभ मत के, धर्म के, मानव क लक्ष्य प्राप्ति में उपयोगी वनावक हेतु एक समन्वय क सृष्टि कयलन्हि अछि। ओना तऽ संसारक जतेक व्यक्ति अछि सबहक विकास क गति वा उपयुक्त साधना पृथक होतै। तथापि बिकास क उन्नत अवस्था में मनुष्य क आत्मो-पलब्धि क प्रयत्न के चारि भाग में बाँटल गेल अछि जकर नाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करण कर्म, भक्ति, राज वा ज्ञान योग होइत अछि। भारत क प्राचीन वैदिक पद्धति सँ कर्म, भक्ति ज्ञान कत्रिक क प्रथा अवैत अछि जाहि पर गीतो में जोर देल गेल अछि। स्वामीजी क आधार शिला छैन निष्काम कर्म। बिना निष्काम कर्म क चित्त शुद्धि सम्भव नहिं। अपनो जीवन क प्रारम्भहिं सँ निष्काम कर्म हिनक सभ सँ पैघ अभिरूचि रहलन्हि अछि। हिनका आश्रम में जीवन में एखनो निष्काम कर्मक प्रधानता अछि। भक्ति क, श्रद्धा क स्थान तहिना जीवन में बहुत उच्च छै। भक्ति क विना अध्यात्म की, विकास की ? आखीर प्रेममय बनव तऽ जीवन क लक्ष्ये छिऐ। तही अनुसार भक्ति क उच्च स्थान हिनका जीवन वा सिद्धान्त में रहलैक अछि। थोड़ेक कीर्त्तन करब हिनकर अपन नित्य कर्म छैन। आश्रमक भजन हौल में आव सत्रह वर्ष सँ लगातार 'हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे' क कीर्त्तन भऽ रहल अछि। भक्ति क प्रकार वा विस्तार पर अनेकों ग्रन्थ लिखने छथि। जप हिनका साधना समन्वय क एक आवश्यक अङ्ग अछि।

राजयोग वा हठयोग क अभ्यास तहिना सभ के जीवन क एक आवश्यक नियम बनाबक आदेश दैत छथिन्ह। आसन, प्राणायाम अहू अवस्था में नित्य प्रति करै छथि। मनो निग्रह पर विशद ग्रन्थ छैन।

ज्ञान आ सन्यास क प्रतीके छथि। हिनका सन अनुभवी अद्वैत वेदान्तीक अनेकों शताब्दी सँ भारतवर्ष में अवतरण नहिं भेल छल। सन्यास क सूतल प्रतिष्ठा के पुनः जगौलन्हि अछि,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ओकरा महत्ता के सबूत देलन्हि अछि। साधना चतुष्टय क अभ्यास पर जोर देलन्हि अछि।

हिनक साधना समन्वय एक और अपूर्व वस्तु अछि जाहि पर अनेक विशद ग्रन्थ लीखल गेल अछि। साधना समन्वय के गृहस्थ हो वा सन्यासी, बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष कोनो देशक धर्म क जाति क लोक अपना सकैत अछि। एकरे अनुशीलन क हेतु समय समय पर आश्रम में साधना सप्ताह आयोजित भेल। ब्रह्म मुहूर्त में भजन प्रार्थना, किछु काल क वाद सूर्योदय सम काल में आसन प्रणायाम, अपराह्न में ज्ञानोपदेश, सायंकाल क सत्संग में भजन प्रवचन एवं बराबरि निस्वार्थ कर्मयोग क अभ्यास आश्रम में साधक क दैनिक कार्य क्रम रहैत अछि। साधना समन्वय में सभ धर्म क साधना क सार अछि।

ओना तऽ सभ धर्म क उच्चतम आदर्श स्वामी जी क अपना आचरण सँ प्रगट होइत रहै छैन्ह। ओ आत्म निर्भरता ओ ईश्वरार्पण छैन जे सम्पूर्ण दुनियांक, आश्रम क, काल्हुक सभ चिंता छोड़ि केवल आनन्द तरंग में भसिआइत रहै छथि आ तकर प्रति फल रूप ईश्वर क ततेक कृपा उपलब्ध छैन जे भक्त वृन्द क धारा प्रवाह आवर्त जकां घेरनहिं रहै छैन। भक्त वृन्दक वाह्य अभि-रूचि, जाति, धर्म, रंग, रूप, अवस्था वा पोशाक पृथक रहितो आत्मोपलब्धि क लक्ष्य क एकता सूत्र में वद्ध रहने आपस में निश्छल प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोग रहै छैन। श्रेय पथ क हेतु आधुनिक युग में सर्वोत्कृष्ट विधि क उद्घाटनक हेतु लोक हिनका युग पुरुष कहैत छैन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(११) शिवानन्द साहित्य :—श्रेयान्द्रव्यमयाज्ञानात ज्ञान-यज्ञः परंतप अथवा ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति में मतिः कहलन्हि अछि श्रीकृष्ण गीता में। दूध क हेतु श्री चांदनारायण हरखौली क देल पांच रुपया सँ स्वामी जी क ज्ञान गंगा क उद्गम भेल। छोट छोट पर्चा पर धर्मोपदेश छपवा बांटऽ लगला। विभिन्न पत्र पत्रिका में लेख छपऽ लगलेन्ह। क्रमशः आश्रम में Divine Life (दिव्य जीवन), Wisdom Light (ज्ञान ज्योति), Forest Acadamy Weekly (अरण्य विद्यालय साप्ताहिक), Health and Long Life (स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन) आदि पत्र छपव प्रारम्भ भेल। सम्प्रति योग वेदान्त एवं Branch गजेट सेहो छपैत अहि। एकरा अलावा अफ्रीका सँ Path to God Realisation (आत्मा साक्षात्कार क पथ) बंगलोर सँ Divine Life एवं अनेको और पत्र पत्रिका संघ क दिश सँ छपैत अहि।

स्वामी जीं महाराज क एतेक अध्यात्म ग्रन्थ आइ तक केंओ संत महात्मा नहिं लिखने छलाह। करीव तीन सौ ग्रन्थ अध्यात्म क हरेक पहलू पर, साधना क हरेक विधि पर, धर्म सम्प्रदाय वा मत पर एवं चिकित्सा क पद्धति पर लिखलेन्ह अछि। कतेको ग्रन्थ अहि में तेहन अछि जे एकटा ग्रन्थ पढ़ने बहुतक जीवन में परिवर्तत भेलेन्ह। डाक्टर चेल्लामा 'Treasure of Teachings' पढ़ि कऽ स्वामी हृदयानन्द भऽ गेली। 'Sure evays for success in Life and God realisation' पढ़ि कऽ श्रीकृष्ण देव जी योगी वनि गेला। एकटा 'साधना' में अध्यात्म क उपयोगी सभ बात भेटि जायत।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वामी जी क अनेक ग्रन्थ प्रकाशित करक हेतु शिवानन्द पब्लिकेशन लीग स्थापित भेल। क्रमशः एक विशद छापाखाना आश्रम में खुलि गेल आ उदार भक्त लोकनि क दान सँ छाप क आधुनिक सब सुविधा एकत्रित भेल अछि। शिवानन्द साहित्य में अगणित रत्न क अनुसन्धान करक हेतु The Sivanand Litration Research Institute स्थापित भेल अछि। अहि क्रम में सभ सँ अर्वाचीन अछि The Sivanand Litratess Dissemination Committee जे स्वामी जी क ग्रन्थ, जे मुख्यतः अङ्ग्रेजी में अछि, भारतवर्ष क विभिन्न भाषा में अनुवाद वा प्रकाश करक प्रयत्न करैत अछि। स्वामी जी क अनेको ग्रन्थ क अनेकों विदेशी भाषा में भेल अछि। जर्मन, फ्रेंच, डेनिश, स्पेनिश, इटालियन, जापानी आदि में बीसो ग्रन्थ क अनुवाद भऽ चुकल अछि।

स्वामी जी क लेखनी क स्पष्टता, ओज, प्रभाव अवर्णनीय अछि। वैदिक महर्षि जकां हिनकर ज्ञान सूत्र अध्यात्म क पुनरुत्थान कयलक अछि। हमरा लोकनि प्रार्थना करै छी जे हिनक विग्रह, जाहि सँ विश्व भरि के प्रकाश भेटै छै, चिरस्थायी रहैन।

ॐ सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु सर्वेषां शान्तिर्भवतु।
सर्वेषां पूर्णं भवतु सर्वेषां मङ्गलं भवतु॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आंखिक भाग

देवता हे ? अहँक करव उपचार
तन मन प्राण विसरि बसुधा निज
मांगल हक, अधिकार।
बड़ अहँ शीघ्र ढरी दाता बड़
मांगल त्याग विराग।
मांगल सहज सरल पद युग गत
निश्छल नित अनुराग।
हे सुन्दर बड़ भव्य मनोरम
दीन क आंखिक भाग।
स्मृति पर प्रगट रहय छबि भास्वर
ज्योतिर्मय विभु-जाग।
तृप्ति जतय प्रभु अहँक चरण लग
लोटव हम दिन याम।
स्वीकृत नाथ दयालु करू 'शिव'
'वेद' क लाख प्रणाम।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्व-नियामक

श्रृष्टि अहींक सब अछि महिमा जग
सदिखन शिव सभ ठाम।
ज्ञात रहस्य अहँक नहिं नटवर
आयल भरि मन काम।
आंजलि स्वीकृत केहन करी हर
अछि नहिं बूझल बात।
जय जयकार करक हित विह्वल
अन्तर तर जनु ताक।
मधुर चरण रति भक्ति विमल प्रभु
अपन दिअऽ सब काल।
प्रणति सकल दिस विनत करी हम
अपन विसरि सब हाल।
विश्व नियामक फेर मन क पड़ि
मांगक नहिं अभिलाष।
जे नटवर अछि नयन करुण बड़
ततहि धयल सब आश।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञानोदधि

ज्ञान उदधि हम अयलहुँ अछिलग
कातर माया भीत।
चेतन द्रष्टा वनि वनि खींचल
अछि अपना दिस मीत।
मेटव भ्रम समुदाय सटल मन
कयलहुँ आवि भरोस।
शंकित नाथ कहल नहिं किछु हम
अछि कत छीपल दोष।
बिनु परिचय पड़ि पड़ि जग भटकल
संशय कयल प्रमाद।
रूप तिमिर घन झांपय मालिक
तन भ्रम भर अवसाद।
करुणामय कय स्वीकृत आंजलि
दीन क प्रेम प्रणाम।
य नद लीन करू जन
देव दया केर धाम।
वेद विनत गुन गुन गुण सदिखन
नाविक गाओत गीत। ज्ञा०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

प्रेरक बन्धु

निष्क्रिय देव अपन गत निरखब
अविचल अहँक प्रकाश।
प्रेरक बन्धु अहँक अनुमति हित
ताकल कय कय आश।
देखल भाव विचार हमर सभ
जानल अछि गुण दोष।
धय धय लीख अहँक प्रभु पावन
बढ़ल चली कय होश।
विमल चरण हित टान बढ़य नहि
हो मन विषयक प्यास।
करक कहू निज अभिरुचि नाविक
नत शरणागत तोर।
छूटय आश भरोश अपर सब
देवता हे चीतचोर।
छोड़ि ममत्व सकल विषवक हम
अहँक करि उपचार।
अछि किछु शेष ममत्व जखन तक
बढ़य अहर्निशि प्यार।
कर्म क, देशक, काल क देहक
छूटत सब विश्वास
प्रेरक बन्धु अहँक अनुमति हित
ताकल कय कय आश।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतिथि नयन केर

गावक गीत अपन करुणामय
वाजक प्रणयक बात।
आव कहू अनि अतिथि नयन केर
रहि रहि सबहक कात।
हम हम अछि यदि शत्रु प्रवल वनि
झूठक तम परिधान।
से हम आनय सब किछु आंजलि
गौरव यश धनमान।
योग्य सकी वनि अहँक प्रणय केर
सुलगल उर अरमान।
की हम दोसर कहव ककर लग
चाहल चित वरदान।
जे अछि पार नगर करण क सब:
रहसि मिलव अनि नाथ।
राखि रहक करू देव कृपा वड़
आव करू नहि लाथ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

भ्रम-जाल

ई भ्रम जाल मेटावह स्वामी
किछु कय लेवक चाह खेहारय
सब विसरयप्रभु, तोहर वाणी
संग हमहुं रहि अनुचर मालिक
काटक हित दिन वंसल कानी
की जनु मोह विषय सम्बन्धक
अहँक शक्ति हम निज कय मानी
ई भ्रम जाल मेटावह स्वामी ।
अभय शरण गहि नत जन पाओल
नयन करुण युग मांगल दानी ।
स्मृति द्रष्टा उर प्रखर करू दृढ़
चंचल नहिं गति कालक जानी
जे जड़ झाँपय आभा तोहर
हटवह नाविक अन्तर्यामी । ई०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नट-नागर

चरण रज सटल रही दिन याम।
हम नहिं बन्धु रीति किछु जानल
आन क प्रीति प्रणाम।
लय आकृति माया यदि खींचल
चुप मानस परिधान।
चिपकि रहक अभिलाष कयल अछि
कातर बड़ आह्वान।
शरणागत गति कयल अहूँ अछि
कत लीला कत खेल।
निरखक हेतु नयन छवि व्याकुल
तरसल निश्चल भेल।
सांस सांस में हे देवता हो
मुखरित पद झंकार।
प्रीति प्रतीति अहँक नटनागर
भेटय बन्धु दुलार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृपामय सुन्दर

प्रणय क भीख रहसि 'शिव' माँगल
भाव सकल तजि आन।
की जनु शोच विचार उठय मन
शेष बहुत अभिमान
आश्रित अहँक तिमिर घन नाशक
से जनु विसरय बात।
शंकित खिन्न विषय हित वनलहुँ
सतत कयल आघात।
नहिं व्यवहार तजय मन दुर्दम
छोड़य लीख पुरान। प्र०
मानल नाथ कराबक चाहल
ई तन लय किछु काज।
मन बड़ मूढ़ रहस्य न बूझय
कर्म चरण रति व्याज।
ऊवि उठय मन देखि परिस्थिति
खूजल इन्द्रिय द्वार।
महिमा विश्व अहँक बनि आयल
बूझल नहिं सरकार
सभ दिश विहुँसि कृपामय सुन्दर
आउ करक हित त्राण। प्र०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुर अहँक छवि

अविचल रूप अहँक 'शिव' शाश्वत
निरखक हम दिनयाम।
राखल देव पियास निहित उर
यत्न कयल सभठाम।
अछि सम्बन्ध सघन बड़ विश्वक
देहक देव पुरान।
की जनु खींचि ततहि राखय मन
दय गति कालक भान
कखन सुदिन प्रभु नाविक आओत
विसरक नश्वर आड़।
विसरक नाथ परिस्थिति जे सभ
बान्हल अछि संसार
अपन वनक दय दाता अनुमति
सफल करू आह्वान।
निरखि निरखि नित मधुर अहँक छवि
छेड़क किछु सुर तान॥
जे सभ जड़ संघात बुझल हम
से तजि फैसब धाम।अ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रणय कय दान

ठानी करब हम किछु गुणगान
अछि प्रिय साज सम्हारल सभ निज
सोचि करब संकेत कहक किछु
जे अछि भावल तान। ठा०
स्वागत जीवन बीच करक हित
द्वन्द, मोह, अपमान हरक हित
चरण हेतु सतृष्ण नयन युग
कर इंगित आह्वान। ठा०
नहिं अछि एखन तक यदि चीन्हल
नहिं महिमा यदि व्यापक बूझल
नहिं यदि अर्पित पूर्ण कयल मन
अहँक रचल व्यवधान। ठा०
करू संतुलित रागिणि में निज
छूटत कलरब भेद भाव कृत
गहू चेतना और बढ़ू लग
विहुँसि प्रणय कयदान। ठा०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्णानन्द

वृत्ति हजार तरंग क भीतर
छिपि छिपि नाविक नाथ
रहलहुँ शान्ति अवाध निरन्तर
पूर्णानन्द क साथ।
चपल उपाधि गहल चर दुष्कृत
चाह चरण रति तोर।
भरि भरि देव नयन उर में छवि
कय कय प्रणय विभोर
उतरि करू जीवन लघु पावन
धन्य हमर सुर तान
बड़ महिमा यश देव सदय अछि
के जन बभ्रत आन॥
प्रणति सहस्त्र उठय झंकृत कय
रग रग 'शिव' जयकार
शृष्टि क खेल नियामक पल पल
विनय करू स्वीकार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

बड़ अहँ पैघ

कयल अहँक नहिं विनती गान
नश्वर जड़ हित लोभ बहुत कय
मांगल हम वरदान।
अछि छल नित्य कृपा करुणा बड़
बूझल नहिं मन म्लान
रूप सकल अछि सिरजल ध्वनि सुर
जतय कयल भ्रमभान
छल नहिं चितवन देखक पद युग
हेरल जे नित प्रान।
हारल थाकल अयलहुं अछि लग
अल्हड़ चाहि दुलार
महिमा गान करक हो अनुमति
लग रहि पावक प्यार।
बड़ अहँ पैघ हमर नहिं कृति किछु
बिसरल व्यग्र विचार।
शरणागत जहि विधि हो राखक
राखू राखनिहार॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नटवर

हेतु अहींक जीवन अछि नटवर
अपन करू दिन याम।
रहि लग अहँक सरस वन जीवन
अहँक चरण विश्राम ।
भावत मानि अपन मन कयलहुँ
हमहुँ सजन अभिसार।
अन्तरतर कर आमन्त्रण चुप
झट जनु करब दुलार ।
दुर्गति अहँ विनु बड़ हम सहलहुँ
पड़ि पड़ि चोर क फेर।
आकृति वहु धय धय तम खींचल
कयलहुँ तैं अछि टेर।
जहि विधि जखन जतय जैं भावय
करक कहू उपचार ।
हे वर, बन्धु, कृपालु, सजन प्रिय
हँसि कय स्वीकृत प्यार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

अभिभावक

करुण कृपा बड़ अछि लग खींचल
संसृति दोष क पार ।
मूर्त्ति विमल थिर रहय हृदय गत
कयलहुँ यत्न हजार ।
मूर्त्ति विविध हम लखि लखि भावल
मोहक मारल आन ।
बूझक शेष रहस्य रहल बड़
अछि भव स्वप्न समान ।
सृष्टि क चक्र पड़ल लय मानस
कयलहुँ अछि व्यवहार
सदि खन समतरि सत्य विमल छवि
देखव हम सरकार ।
प्रणय प्रसून बनल सन जीवन
पद पर शोभत नाथ।
स्वजन सखा गुरु अहं अभिभावक
निशि दिन राखब साथ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकरुण शिव

निश्छल नटवर गायव लग रहि
बड़ महिमा यश गान।
बड़ ममता रति मोहक मारल
रोकय वनि व्यवधान
जे किछु कयलहुँ भल कय मानल
देल स्वय के मोन।
कर्म क भार हटय अछि कयलहुं
सकरुण शिव आहूवान
भक्ति प्रणय कय कय निशिवासर
काटव जीवन आव।
अहींक खुशी वनि तुष्टि हमर रह
अहँक चरण बड़ भाग।
सभ दिश नाथ प्रणति नत कयलहुँ
माफ करु अपराध।
एक भरोस अहीं दाता 'शिव'
कयलहुं नहिं बड़ साध
नाथ प्रणति नित विहुंसि करु अनि
नाविक प्रभु स्वीकार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रणय निधि

अणु अणु में प्रगट प्रणय निधि हे
हो स्वीकृत प्यार।
शृष्टि करब हम नूतन हे
की विधि उपहार॥
प्रति छन बाहर भीतर हे
कयलहुँ प्रतिघास।
मोह तिमिर हम व्यापक हे
नहिं बूझल बात॥
कलरव कय बड़ प्रकृति हे
बान्हल लय काल।
नयन अपन भरि निष्ठा हे
तोड़ू भ्रम जाल॥
अहीं गुरू रवि हरि हर हे
सब शक्तिक धाम।
दायक सौख्य अभय वर हे
प्रभु लाख प्रणाम॥

—):o:(—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाविक

अयलहुँ अयलहुँ नाविक सुनि हम
अहँक मधुर सुर तान ।
मिलि मिलि मौन रहक लग चाहल
व्याकुल वनि वनि प्रान ।
चूवय झरि झरि अमृत भरि भरि
अहँक विमल मुसकान ।
युग युग गहि गहि रहय नयन युग
चाहल उर वरदान ॥
खीलि खीलि जनु उर वनि वनि निखड़ल
छवि रसमय मधुमान ।
छिपि छिपि रहलहुँ दिन दिन कयलहुँ
अपनहिं हित वड़ टान ।
रति मति गति पहु हँसि हँसि कहि कहि
चुप चुप प्रेमक बात ।
लग थय राखि अपन करु नत जंन
विसरब हम धन्न गात ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्धु-सखा, प्रभु

रटि पचि रहलहुँ विश्व पड़ल हम
व्यर्थहि गेल प्रयास।
बन्धु सखा प्रभु अहँ नहिं अयलहुँ
ताकल दास उदास।
रिझवक रीति अहँक नहिं बूझल
बाधल संशय काम।
दोष क्षमव सब हँसि लग आयब
सोचल प्रणय क धाम
छन पल अणु अणु देव नियामक
मेटि, सकल अभिमान
अंश सखा चर प्रणत चरण लग
कहु कहु गाओत गान
चमकि उठू अनि भीतर बाहर
दीन क एक भरोस।
देश क कालक भय दुविधा सब
छोड़ि रहब कय होश।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभयँकर

हर स्पन्दन में हे 'शिव' गा
बूझक योग्य करू से गायन
छापल कोन भांति अछि कण कण
तिमिर निहन्ता हे शाश्वत विभु
पल पल हँसि हँसि आ। ह०

जे सम्बन्ध मृषा वहु जोड़ल
से अनु बरबस अ.गुर छोड़ल
त्राता, नायक हे नाविक गुरु
प्रणय विभोर बना। ह०

कृत, अकृत, आकृति धय धयजे
भूत प्रेत सन नाथ डरावय
अहंकार ग्रह ग्रस्त न बूझल
अहँक सकल महिमा। ह०

ज्योति प्रखर, अक्षुण्ण, परात्पर
कृपा करू हे प्रभु अभयँकर
धय धय शरण कहल करुणामय
अनुचर सतत बना। ह०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिमिर अघ नाशक

आंजलि फूल बनायब सब किछु
अहँक करब उपचार।
बढ़ि बढ़ि आन क पद पर तन मन
माँगल अछि 'शिव' प्यार ॥
विश्व अहँक बड़ वहु आश्रित जन
हमर अहीं टा नाथ।
दुर्गुण दोष गहय प्रभु खींचय
आउ रहक हित साथ ॥
धन्य अहँक जयजय कहि दिन दिन
ऊठय उर झंकार।
काल प्रवाह, तिमिर अघ नाशक
रहब सतत बनि चार ॥
निर्भय गायब निरलस गुण गण
करुण कृपा वरदान।
दय दय देव सफल करु जीवन
वेद क जीवन प्रान ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वजन, धन प्रियतम

चाहव जेहन करत झंकार।
अछि तन्त्री ई वीणा तन मन
अहिंक जुटाओल तार
न्योछावर पद पर प्रतिपल बनि
चाहल काटक काल।
खिलय अहर्निशि आभा उरगत
कय कय मधुर विशाल
की कृतघ्न हो घैल कुम्हारक ?
सृष्टि अहँक नतचार। चा०
कयल विचार बहुत लय लय मति
की अछि नीक वेजाय।
सबहक पार अहीं. हित शाश्वत
से नहिं बूझल जाय।
जीवन भाव कुसुम खिलि सुन्दर
हो पद पर उपहार।
भ्रम नहिं आड़ बनल किछु रोकय
अहँक असीम दुलार
आउ स्वजन धन प्रियतम, पौरुष
झंकृत कय उर तार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाश-विमोचन

एक अहँक छवि रहय नयन लग
नाविक वन्धु पुरान ।
योग्य तकर बनि वनि निशि वासर
किछु हम छेड़व तान ।
रहि रहि अन्तर तर गत व्यापक
प्रेरल शृष्टि क धार ।
जे अछि गहल उपाधि बहुत जड़
खींचय बार वार ॥
की नहिं देल विनत हित वर प्रभु
महिमा अपरम्पार ।
सदिखन आप्त वनल हम लग रहि
अहँक करव जयकार ।
रस हम मौन अहँक निश्चल विभु
करव अहर्निशि पान ।
पाश विमोचन शरण गहल 'शिव'
की गति आवहु आन
एक अहँक छवि रहय नयन लग
नाविक बन्धु पुरान ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुभंकर

भास्वर देव दयाल गुरो !
नहिं अछि धैर्य वियोग सहक छन
पड़ि पड़ि वृत्ति क धार ।
वड़ हम व्यस्त मन क सहि सहि नित
व्यर्थहि बहु व्यभिचार ।
बूझि अपन तन जे छल जकड़ल
आव वनय व्यवधान ।
कयलहुँ कर्म करव वा जे किछु
वरवश खींचय ध्यान ।
आर्त शरण सभ दिन अछि रहलहुँ,
करूण-कृपाल नमो । भा०
बूझल सत्य अहँक महिमा प्रभु
नहिं हम पाओल ज्ञान ।
भ्रम कय भटकि भटकि रहलहुँ भव
बूझि बहुत धन मान ॥
निश्चल मौन दयार्द्र शुभंकर
हे तन इन्द्रिय पार ।
शुभ्र किरण छव बेरि अपन 'शिव'
दूर करू संसार ।
गति दायक नाथ नमो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरुवर

शान्ति अटल दृढ़ व्यापक गुरुवर
सब चिन्ता भय पार।
प्रणत अहर्निशि रहय ततय चित
बिसरल तन व्यवहार।
यत्न तकर नहिं सफल बनय यदि
पूरय नहिं अभिलाष।
प्रीति कृपा बढ़ि सभ दिस घेरत
अन्तर तर कर आश।
जे जाग्रत सन करण लखल सब
बेतुक बड़ संसार।
दूर कहय जनु चललहुँ तजि पद
बूझल नहिं श्रुतिसार ॥
जे स्वप्न क सब निज विरचितसन
देखल अछि आकार।
से मन मलिन कहल जनु अछि बड़
संसृति बीज प्रसार।
प्रणति सुनावक आवक लग बढ़ि
मांगल करुणा प्यार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भास्वर देव

जखन कहब किछु आंजलि लय लय
आयब बढ़ि बढ़ि पास।
परिचय देव कहू निज भास्वर
अहँ बिनु नयन उदास।
भीतर छिपि छवि जे लय रहलहुं
गह नहिं मानस मूढ़।
शत्रु ग्रसय बनि भाव अहँ केर
बड़ अछि भेद प्रगूढ़॥
अयलहुं धय कत छवि निशिवासर
चीन्हक नहिं उर बोध।
मोह तिमिर व्यवहार सटल मन
कयलक छवि अवरोध।
देव स्वयं आत्मा हरि 'शिव' अहँ
अपन भरू उर प्रेम।
प्रणयांजलि कय स्वीकृत नाविक
हमहुँ लखी नित क्षेम।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शरण सनातन

धय धय रूप सजन बहु अयलहुँ
अपन कहक हित बात ।
नहिं हम चीन्हि अहँक सकलहुं छवि
अन्तर तर गत नाथ ।
बड़ आदर्श विमल वनि युग युग
अयलहुं देव महान ।
भास्वर बन्धु हृदय गत देखल
संसृति रति अज्ञान ।
बूझल जे हम रूप विविध प्रिय
अज्ञ बनल जग आन ।
छिपि छिपि अहं तहं खेल कयल प्रभु
हो मति बूझक आव ।
शरण सनातन निर्भय लखि छवि
बनब सदा 'शिव' तोर ।
आव उठू खिलि आर्द्र करुण उर
नाविक प्रभु चितचोर ।
आंजलि प्राण धरत पल पल पद
सदिखन सभतरि गात । धय०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिता, गुरु, रक्षक

आव समय नहिं अछि शिव छोड़क
तृषित नयन चुपचाप
तुच्छ बनल हम जीव कयल अछि
मोह पड़ल बड़ पाप ।।
मानल कय नहिं सकलहुँ अछि किछु
तेहन भजन उपचार ।
मानल अछि बड़ मन मन भावल
मांगल उमड़ल प्यार ।
आव कखन तक घुरि घुरि ताकव
जखन तखन चुपबाट
खींचनिहार अहिं परदा सब
प्राणक. हे सम्राट ।
देवता, वन्धु, पिता, गुरू रक्षक
नयन करुण कर शोर
आजुक दिन बढ़ि अपन कहू अनि
कय कय . प्रणय विभोर ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिवानन्द

शिवानन्दं गुरूँ नौमि
शिव रूपं सनातनम्।
विश्ववन्द्यं चिदानन्दं
विज्ञानभ्रन रूपिणम्
नूतन भाव कुसुम लथ लय हम
गांथव सुन्दर हार।
व्यापक देव समुद पहिरायव
सब लय संचित प्यार।
रूप विविध यदि अहँक गहय मन
भावल जे सब आन।
यदि गति काल फँसय मन सदिखन
बनय प्रवल व्यवधान।
छेड़ि तखन रागिणि की तरहक
अहँक करब उपचार।
प्रणय आर्द्र लय नयन रहब हम
ठाढ़ कतहु चुप चाप।
का जनु नाथ अहंक मनः भावय
श्रृष्टि क ज्योति महान
प्रीति प्रणति स्वीकृत कय गुरुवर
हँसि हँसि करू प्रदान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आर्य संस्कृति आ दर्शन क उद्गाता :

(श्री एन० भी० गैडगिल राज्यपाल पंजाव)

आध्यात्मिक महापुरुष लोकनिक वीच स्वामी शिवानन्द क परमोच्च स्थान छेन जिनका जिवन्मुक्त भेला पर मानवता के अपन संदेश कहक आवश्यकता बुझना गेलैन। अनेकों वर्ष सँ स्वामी जी भारते में नहिं, प्रत्युत संसार भरि ज्ञान प्रचार करैत रहला अछि। आधुनिक युग में योग वेदान्त क हेतु एतेक केओ नहिं कयलक अछि। स्वामी जी हमरा लोकनि के सांस्कृतिक सामञ्जस्य सं अद्भूत तुष्टि, पुष्टि आ चेतना प्रदान करथु।

महान संत आ दार्शनिक आ सबहक बन्धु

(श्री भी० भी० गिरि राज्यपाल, उत्तर प्रदेश)

स्वामी जी महाराज सनक महा संत दार्शनिक आ सबहक बन्धु क देश विदेश में अध्यात्म प्रचार क लगन के हमरा पुनरुक्ति करक काज नहिं। हिनक मेधा प्रदायिनि अध्यक्षता में दिव्य जीवन संघ योग वेदान्त क रहस्य क प्रचार करैत अछि जाहि सं भारतीय संस्कृति क उत्थान, विश्व प्रेम, सर्व धर्म समन्वय, भ्रातृ भाव एवं सेवा भाव क वृद्धि भऽ रहल अछि।

प्राचीन भारतीय संस्कृति क उत्थापक

(श्री एच० भी० पटस्कर राज्यपाल, मध्यप्रदेश)

अहि देश क स्वामी शिवानन्द जी महाराज एक प्रख्यात योगी आ वेदान्ती छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राचीन भारतीय संस्कृति के आधुनिक युग क अनुकूल एक नवीन रूप रेखा में पुनरुत्थान करब हिनका जीवन क उद्देश्य रहलन्हि अछि। संगहि भ्रातृ भाव क, विश्व प्रेम क, सेवा भाव क विकास क हेतु प्रयत्नशील रहला अछि। मातृ भूमि क ई अध्यात्म वीर चिरंजीवी रहथु।

गुरू और शिष्य

(श्री पैट पिअर्सन, जोहान्सवर्ग)

जे स्वामी शिवानन्द जी सनक गुरू क सम्पर्क में नहिं आयल हुनका हम जे किछु एखन कहब से आश्चर्यजनक बुझना जेतैन। एकराबूझक हेतु अनुभव क आवश्यकता छै। तैओं हम गुरू शिष्य क सम्बन्ध शब्द में व्यक्त करक चेष्टा करै छी। ई सम्बन्ध ततेक सुन्दर, आनन्ददायक आ गम्भीर होई छै जे केवल अन्तस्तले टा में बुझना जायत।

गुरू क चरण में आत्म समर्पण केने जीवन एक आनन्द दायक कविता क प्रवाह वनि जाइ छै। जे किछु देखै छी, छुवै छी सभ में सौन्दर्य आ ईश्वरत्व भरल बुझना जायत। तखन बुझना में आओत जे केहनो टेढ़ टूढ़ आ कुरूप पात्र रहितो सभ में ईश्वर क सत्ता छैन।

जौं स्वामी शिवानन्द सँ एक वेर सम्पर्क भेल तऽ फेर घुरनाइ कहाँ ? हुनकर तेहन शक्ति छेन कि आगाँ वढ़हीक हैत। असीम धैर्य सँ हमरा लोकनिक पद स्खलन देखैत रहै छथि। केहनो अन्हार रास्ता हो, ओ हाथ पकड़ने बढ़विते रहता। चूकऽ नै दै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छथि। ईश्वरक अनुसन्धान में छूरा सनक तेज धार वाला रास्ता में असीम करुणा सँ बचा कऽ लेने चलै छथि। हम सभ अपन दुर्वलता, विफलता हृदय खोलि कऽ हिनका सामने कहि सकै छी तकरा हेतु डँटता नहिं, ने घृणा करता। हमरा लोकनिक सीमित बुद्धि जे नहि वुझि सकैये ओ छिऐन हिनक असीम ज्ञान जे अपना शिष्यो के दे छथिन्ह। ओ हमरा सभ के दिव्य प्रेम सँ तेना ने भरि दै छथि, जे हृदय उमड़ि उठैये आ ताकऽ लगै छी हम सभ जे ककरा बांटि कऽ थोड़ेक दऽ दिऐ।

जीवन क संघर्ष क वीच हम सभ कतवो व्यस्त कियैक ने भऽ जाइ, जैखन हुनका उपस्थिति क स्मरण होइयें एक दिव्य आनन्द सँ भरि कऽ अपना परिस्थितिओ के विसरऽ लगै छी।

ज्योति सँ प्रकाश में आ दै छथि अगुआय

(श्री रेजिना, जेनेवा, स्विटजरलैण्ड)

संसार में हमरा लोकनिक जतेक प्रश्न अछि सबहक समाधान योगे टा में रहला सँ गुरू क बड़ आवश्यकता। संत अपना पवित्र उपदेश सँ खाधि खूधि सँ बचबैत अनेकों कठिनता क बीच होइत हमरा आगू बढ़बै छथि।

गुरू हमरा यथार्थ, नीक भगवान क दास हेवा में सहायता करै छथि। अपना आदति सँ हम सभ बहुधा लाचार रहै छी। धैर्य सँ गुरूदेव देखैत रहै छथि जे कखन चेतना जागि उठत। पाशविक स्वभाव पर विजय पायब बड़ कठिन होइ छै, यावज्जीवन नित्य प्रति प्रयत्न करक अछि। बराबरि विवेक, आत्म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निरीक्षण अध्यवसाय सँ ओकरा जीतक अछि। अपना दोष के माफ करक उदारता के हटेवाक अछि। आन आन जे करैये ततवहि में ओझरायल अहूँ के नहिं रहक अछि। अनके जकाँ करैत रहब तऽ आहाँक विकास केना हैत ? अहि सभ पर ध्यान दीअऽ जें आहां क शक्ति क अपव्यय नहिं हो।

प्रेम सँ गुरू हमर दोष देखवै छथि आ ओकरा दूर करवा में मदति करै छथि।

जाही दिन, भगवान क कृपा सँ, हम स्वामी शिवानन्द क ज्ञान पियूष धारा क किछु पान करै छी, ताही दिन हमर असल जीवन प्रारम्भ होइये। ज्योति सँ प्रकाश में लऽ चलै छथि अगुआय। यथार्थ साधक के और चाहवे की करियै ? हमर पूज्य गुरूदेव सभ के आत्म साम्राज्य देखेवाक हेतु बहुत दिन तक जीवैत रहथु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आहां ब्राह्मण बनू

कियैक जनेउ पहिरने छी, बुझै छिऐ? जनेउ त्रिदेह सँ बहरेवाक प्रतिज्ञा थीक। आहां शपथ खेने छी जे हम अध्यात्मिक जीवन व्यतीत करब। किन्तु तकरा हेतु अपना जीवन में की सब करै छी? उठै छी आहाँ भोरे ब्रह्म मुहूर्त्त में? कतेक जप ध्यान करै छी? गायत्री तीन बेर आचार्य कान में कहलन्हि। अपन इष्ट मन्त्र हैत। ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय आदि कतेक मन्त्र जनैछी। कोन मन्त्र कम सँ कम तीन घंटा जप करै छी जे मन में सामर्थ्य हो अपन लक्ष्य बूझक?

छूआछूत लऽ कऽ तऽ अपना धर्म के भनसा घर में गोड़ने छी किन्तु आहार सात्विक अछि की? कड़ू, तीत, अम्मत, लहसुन प्याज, मांछ, मांस सात्विक आहार नहिं छिऐ। कम खाउ। स्वादक हेतु नहिं खाउ। व्रत करू। एकादशी, चतुर्दशी, चन्द्रायण आदि। रवि कऽ नून छोड़ू। उपनिषद कहै छथि 'आहार शुद्धौ, सत्व शुद्धिः, सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।'

आसन, प्राणायाम जनै छी? नित्य त्रिकाल सन्ध्या में तीन बेर प्राणायाम करक बिधान छल। एक आध घंटा केने शरीर स्वस्थ रहत। मन क संतुलन में सहायता भेटत। जप करक हेतु पद्म, सिद्ध आसन में बैसल करू। शीर्षासन, सर्वाङ्गासन करू।

ब्रह्मचर्य क रक्षा करू। वीर्य रक्षा केने पराक्रमी बनब। बुद्धि शुद्ध रहत। किछु प्रार्थना श्लोक कण्ठस्थ राखू आ जखन तखन पढ़ल करू। मन उन्नत बनत। नित्य एक अध्याय गीता वा चण्डी पाठ करू। कीर्त्तन आ स्वाध्याय नित्य नियमित रूपे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करू। भागवत, रामायण, उपनिषद, पुराण जे ईच्छा हो, एक आध वंटा पढ़ि लेल करू। अपन संस्कृति बूझव। अपना जीवन क लक्ष्य बूझव।

झूठ नहिं बाजू। पाखंड नहिं राखू। जिद्द नहिं करू। नित्य अपना गलती क विश्लेषण करू वा तकरा दूर करक प्रयत्न। अनका कष्ट नहिं दिऔ। क्रोध नहिं करू। आत्म निर्भर बनू, स्वयं सेवक। अपना आवश्यकता के कम करू। व्यर्थक गप्प-सप्प छोड़ू। व्यर्थ चिन्ता छोड़ू। सादा जीवन उच्च विचार राखू।

किछुकऽ नित्य दिन, प्रति मास दान देल करू। जतवे बनि पड़े। ककरो अधलाह नहिं करिऔ। निन्दा, दोष-दृष्टि, चुगली छोड़ू।

मोन राखू जे मृत्यु आहांक प्रतीक्षा में अहि। अपन कर्त्तव्य अहीं के करक अहि। मन के ढील नहिं दिऔ। अपना के भगवान क शरण में राखू। संतोष राखू। तखन ब्राह्मण बनव। एतबहि में वेदक सार अछि। अही सँ मोक्ष भेटत।

ॐ शान्ति! ॐ शान्ति!! ॐ शान्ति!!!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi